हँसती दुनिया

₹ 10

वर्ष 41• अंक 9
सितम्बर 2014

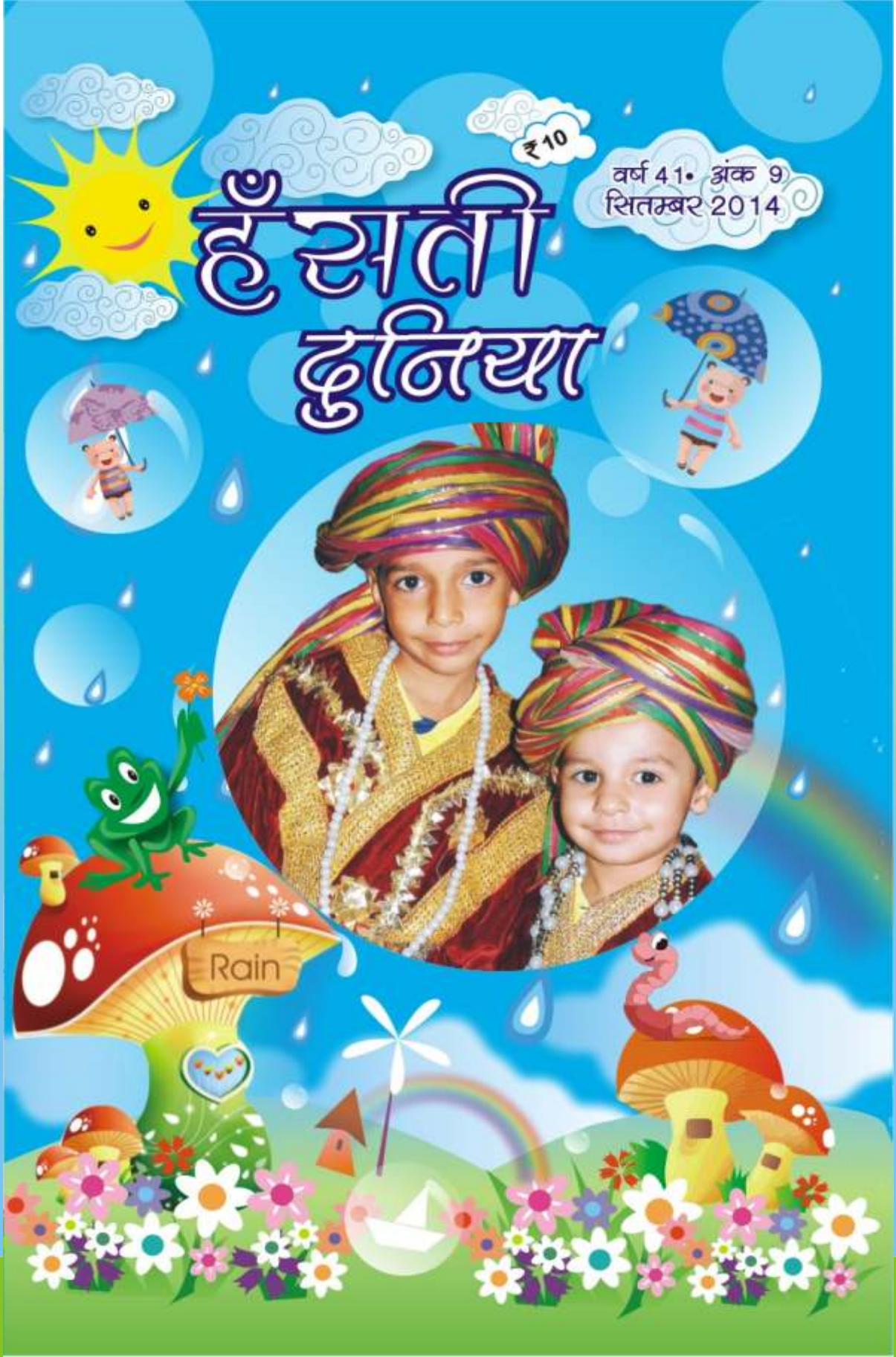

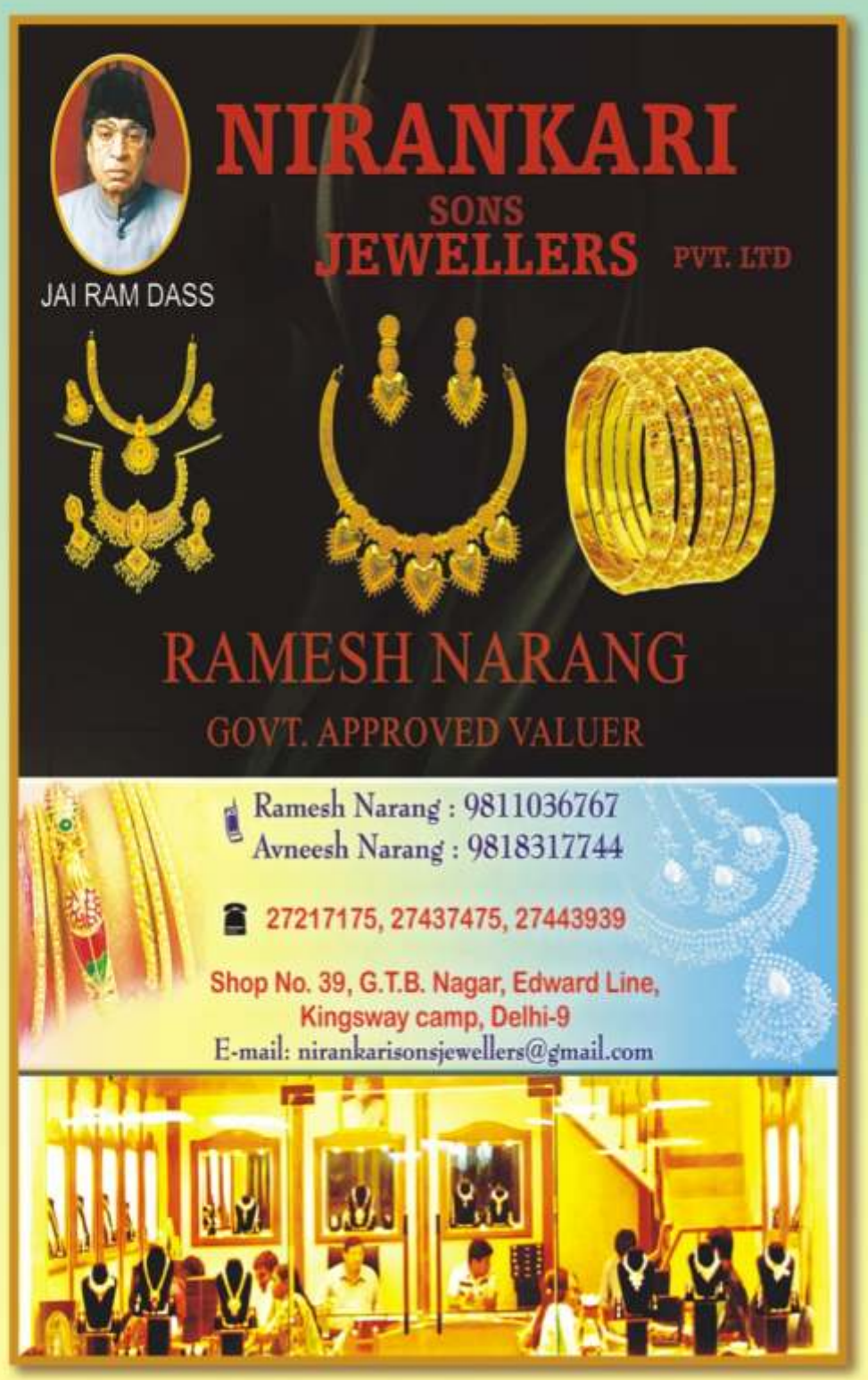
NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD
JAI RAM DASS
RAMESH NARANG
GOVT. APPROVED VALUER
Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744
27217175, 27437475, 27443939
Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

वर्ष 41
अंक 9

हँसती दुनिया

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सितम्बर
2014

स्तम्भ

सबसे पहले	4
कभी न भूलो	5
वर्ग पहेली	10
जन्म दिन मुबारक	12
समाचार	18
सम्पूर्ण अवतार बाणी	22
भैया से पूछो	34
पढ़ो और हँसो	46
रंग भरो परिणाम	48
आपके पत्र मिले	64

चित्रकथा

दादा जी	14
चम्पू	52
फोटो फीचर	56–58

सम्पादक
विमलेश आहूजा
सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

कार्यालय फोन :
011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail:
editorial@nirankari.org

कहानियां

अभ्यास	किशन लाल शर्मा	6
तलवार और सूई	राधेलाल 'नवचक्र'	8
पढ़ो–लिखो, बनो महान	हरजीत निषाद	19
दुष्ट न छोड़े दुष्टता	ओमदत्त जोशी	28
बूंद बूंद मिलकर बनता है...	राजेन्द्र कुमार सिंह	37
श्रेष्ठबुद्धि	पृथ्वीराज	40
एकता में बल	सुकीर्ति भटनागर	59

कविताएं

ऐसा पर्यावरण बनाएं	परशुराम शुक्ल	11
दो बाल कविताएं	दीपांशु जैन	23
बगुला, सारस	अंकुश्री	27
दो बाल कविताएं	मुनिराज' हरिशंकर जोशी	33
कोयल	सोनिया रमोत्रा	45
सुहानी भोर	गोविन्द भारद्वाज	51

विशेष/लेख

यादों के झरोखे से...	शिखा जोशी	24
भारत में सबसे बड़ा, ऊँचा और लम्बा	भारत भूषण	26
भारत रत्न से सम्मानित विभूतियां	राजेश कुमार	36
विज्ञान प्रश्नोत्तरी	घमण्डी लाल अग्रवाल	43
पेड़–पौधे भी होते है मांसाहारी	सुप्रिया	44
अजब दुनिया चमगादड़ की	ईलू रानी	62

COUNTRY	ANNUAL	3 YEARS	6 YEARS	10 YEARS	LM (20YEARS)
INDIA/NEPAL	Rs. 100	Rs. 250		Rs. 600	Rs. 1000
UK	£ 12	—	£ 60	£ 100	£ 150
EUROPE	€ 15	—	€ 75	€ 125	€ 200
USA	$ 20	—	$ 100	$ 150	$ 250
CANADA/AUSTRALIA	$ 25	—	$ 125	$ 200	$ 300

OTHER COUNTRIES # Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

प्रकाशक एवं मुद्रक सी. एल. गुलाटी, सम्पादक विमलेश आहूजा ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी, दिल्ली –9 से मुद्रित करवाया।

श्रेष्ठ कार्य से ही संतुष्टि

तीन–चार लोग एक स्थान पर बैठ कर आपस में बातें कर रहे थे। बातों ही बातों में वे किसी न किसी की बुराई और छींटाकशी कर रहे थे। किसी को बेईमान, किसी को कामचोर तो किसी को रिश्वतखोर और न जाने किस–किस रूप में चरित्र हनन करने के आरोप वे लगा रहे थे। इन बातों में उन्हें बहुत मज़ा आ रहा था। वे हर बात को बढ़ा–चढ़ा कर बोल रहे थे। इसी दौरान उन्हें खाना परोसा गया। खाना खाते–खाते किसी के मुंह में कंकर आ गया तो किसी के मुंह में बाल आ गया। उनके मुँह से अब तक जो बुराई और क्रोध दूसरों के बारे में निकल रहा था अब उनके खाने में कंकर और बाल ने आकर और भी भड़का दिया। अब वे लोग और भी अशान्त और अमर्यादित हो गये।

इसी बीच एक विवेकी पुरुष वहाँ आया और बोला– इस खाने में कंकर और बाल मैंने डाले थे क्योंकि मैं तुम्हारी बातें सुन रहा था और तुम्हें बताना चाहता था कि "तुम केवल वही खाना चाहोगे जो खाने योग्य है, तुम बाल और कंकर–पत्थर नहीं खाना चाहोगे क्योंकि वे तुम्हारी सेहत को खराब कर देंगे। मैं देख रहा था कि तुम न जाने कितने अशुद्ध विचारों से अपने मन को मलीन करते जा रहे थे।

हमें ध्यान रखना चाहिए कि अगर अशुद्ध भोजन हमारे स्वास्थ्य को खराब कर सकता है तो अशुद्ध विचार भी अवश्य ही हमारे मन को अशुद्ध करेंगे। जीवन में जो भी स्वच्छ, निर्मल, शुद्ध एवं स्वास्थ्यवर्द्धक हो वही खाएं, वही सोचें, वही बोलें और वही कर्म करें। हर वह कर्म जिससे जीवन में आनन्द एवं संतुष्टि का अनुभव हो वह कार्य ही उत्तम एवं श्रेष्ठ होता है।

कसौटी यह है कि क्या मुझे अमुक कार्य करने पर आनन्द मिला और अगर मिला है तो परम शुभ है।

– विमलेश आहूजा

संग्रहकर्ता : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

कभी न भूलो

★ ब्रह्म की प्राप्ति, भ्रम की समाप्ति।

★ धर्म वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य असल में मनुष्य बनता है।

— बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

★ जुबान की अपेक्षा जीवन से उपदेश देना कहीं अधिक प्रभावकारी है। — स्वामी दयानन्द सरस्वती

★ मानव में ठीक उतना ही दिखावटीपन होता है, जितनी उसमें बुद्धि की कमी होती है। — पोप

★ एक मिनट देर से पहुँचने की अपेक्षा एक घंटे पहले पहुँचना अच्छा है। — शेक्सपीयर

★ जो कार्य जितनी नेकनीयत से किया जायेगा, उतना ही श्रेष्ठ होगा।

— महात्मा बुद्ध

★ जो कुछ तुम आज कर सकते हो, उसे कल के भरोसे पर कभी मत छोड़ो। — फ्रैंकलिन

★ बुरी सोहबत से उसका न होना ही अच्छा है, क्योंकि हम दूसरों के गुणों की अपेक्षा दोषों को जल्दी ग्रहण कर लेते हैं।

— स्वामी विवेकानन्द

★ गुस्से का सर्वोत्तम उपचार विलम्ब है। — सेनेका

★ मधुमक्खी के समान गुलाब से मधु ले लो और कांटे छोड़ दो।

— अमरीकी कहावत

★ जो गुणी होते हैं, वे अपनी जिम्मेदारियों की बात सोचते हैं। जो गुणहीन होते हैं, वह अपने अधिकार का नाम रटा करते हैं।

— रवीन्द्रनाथ टैगोर

★ ज्ञानी मनुष्य की दृष्टि दूसरों की अच्छाइयों पर पड़ती है जबकि मूर्ख लोग दूसरों के अवगुण टटोलते हैं। — विनोबा भावे

अभ्यास

गुरु द्रोणाचार्य के आश्रम में कौरव, पाण्डव, यदुवंशी और दूसरे देशों के राजकुमारों के साथ द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा भी शिक्षा प्राप्त करता था। प्रतिदिन पढ़ाई शुरू होने से पहले सभी शिष्यों को आश्रम में एक फर्लांग दूर बह रही नदी से पीने के लिए पानी भरकर लाना पड़ता था।

द्रोणाचार्य अपने पुत्र से बहुत प्यार करते थे। वह चाहते थे, उनका पुत्र शिक्षा और अस्त्र–शस्त्र के प्रयोग में सबसे योग्य निकले। इसलिए उन्होंने अश्वत्थामा को सबसे हल्का और छोटा बर्तन दे रखा था जबकि अन्य शिष्यों को बड़े और भारी बर्तन दे रखे थे। सुबह सब शिष्य पानी भरने जाते थे। अश्वत्थामा का बर्तन छोटा था इसलिए वह जल्दी लेकर आ जाता था। अन्य शिष्यों के बर्तन बड़े थे इसलिए वे देर से और धीरे–धीरे लाते थे। अश्वत्थामा का बर्तन हल्का भी था इसलिए वह जल्दी से आश्रम में लौटकर अपने पिता से अस्त्र–शस्त्र चलाने के गुप्त रहस्य सीख लेता।

एक दिन अर्जुन ने यह बात ताड़ ली। वह भी शिक्षा और युद्ध कौशल में अश्वत्थामा से कम नहीं रहना चाहता था। इसलिए अर्जुन दौड़कर जाता, जल्दी से पानी का बर्तन भरता और तेज कदमों से चलकर अश्वत्थामा के साथ आश्रम में पहुँचता। साथ पहुँचने की वजह से अर्जुन को भी अश्वत्थामा के बराबर ही शिक्षा मिलने लगी।

एक बार की बात है। सभी शिष्य आश्रम में भोजन कर रहे थे। अचानक तेज हवा चलने लगी। हवा से आश्रम में जल रहा दीपक बुझ गया और आश्रम में अंधकार छा गया। अंधेरा होने पर भी सभी शिष्य भोजन करते रहे। भोजन करते समय अचानक अर्जुन का ध्यान एक बात पर गया। खाना खाने का मनुष्य को इतना अभ्यास होता है कि अंधेरे में भी थाली से खाना उठाकर हाथ सीधा मुंह के पास ही पहुँचता है। इस बात से अर्जुन के मन में विचार आया। आदमी को खाने का अभ्यास होता है। इसलिए अंधेरे में भी आदमी का हाथ भोजन के बर्तन से बिना भटके मुंह तक पहुँचता है। इस बात से अर्जुन के मन में एक

पौराणिक कथा : किशन लाल शर्मा

विचार आया कि निशाना लगाने के लिए प्रकाश की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है सिर्फ अभ्यास की। जरूरत है प्रयत्न करने की। अर्जुन ने मन ही मन में दृढ़ निश्चय किया कि वह अंधेरे में ही निशाना लगाने का अभ्यास करेगा।

अर्जुन ने अपना विचार किसी को नहीं बताया। खाना खाकर सब शिष्य अपनी–अपनी चट्टाईयों पर लेट गये। सबको लेटते ही नींद आ गई लेकिन अर्जुन की आँखों में नींद नहीं थी। जब सब गहरी नींद में सो गये, अर्जुन धीरे से उठा। उसने अपना धनुष और तीर उठाये और धीरे से आश्रम से बाहर निकल आया।

अर्जुन आश्रम से कुछ दूरी पर जंगल में चला गया। जंगल में घनघोर अंधेरा था। हाथ से हाथ दिखाई नहीं दे रहा था। अर्जुन ने अंधेरे में अपना लक्ष्य बनाया और वह निशाना साधकर तीर चलाने लगा। उस रात के बाद, अर्जुन हर रात को अपने साथियों के सो जाने के बाद अंधेरे में बाण चलाने का अभ्यास करने लगा।

एक रात की बात है। द्रोणाचार्य की अचानक नींद टूट गई। तभी उन्हें कुछ आवाज सुनाई पड़ी। ध्यान से उन्होंने उस आवाज को सुना। उन्हें ऐसा लगा मानों कोई तीर चला रहा है। कौन हो सकता है?

द्रोणाचार्य धीरे से उठे। आश्रम से निकलकर वह आवाज की दिशा में चले गये। उन्होंने देखा घने जंगल में घोर अंधकार में कोई तीर चला रहा है। कौन है तीर चलाने वाला; यह जानने के लिए वह जोर से बोले, ''कौन हो तुम? अंधेरे में क्या कर रहे हो?''

''मैं अर्जुन'', अर्जुन द्रोणाचार्य की आवाज पहचान गया इसलिए डरते हुए बोला, ''गुरुजी मैं निशाना लगाने का अभ्यास कर रहा हूँ।''

''बेटा, ऐसे अंधेरे में?'' द्रोणाचार्य आश्चर्य से बोले।

''अंधेरे में आदमी थाली से रोटी का ग्रास तोड़कर मुंह में डाल सकता है तो फिर अभ्यास करके अंधेरे में निशाना क्यों नहीं लगा सकता?''

अपने शिष्य की बातें समझ में आने पर द्रोणाचार्य अर्जुन को गले से लगाते हुए बोले, ''बेटा मैं वादा करता हूँ। ऐसा प्रयास करूँगा कि संसार में तुमसे बड़ा कोई धनुर्धर न हो।''

और उस दिन के बाद द्रोणाचार्य अर्जुन पर विशेष ध्यान देने लगे।

प्रेरक–प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

तलवार और सूई

एक योद्धा था। उसके शयनकक्ष की किसी दिवाल पर खूंटी के सहारे एक तलवार लटक रही थी। पास ही फर्श पर एक सूई गिरी पड़ी थी, जिसमें उजला धागा पिरोया हुआ था।

तलवार एकाएक अट्टहास कर उठी। सूई कुछ समझी नहीं। वह पूछ बैठी, ''बहन, यह कैसा अट्टहास?''

''तुम नाचीज़ मुझे क्या समझोगी?'' तलवार अहंकार से भरी हुई थी।

''फिर भी कुछ तो कहो'', सूई सहज मुस्कान से साथ बोली।

''मेरी ताकत की मत पूछो। बहुत ताकतवर हूँ। तलवार के मुख से अभिमान टपक रहा था। उसकी अकड़–ऐंठ देखते बनती थी।

सूई नम्रता से फिर बोली, ''मान लिया तुम खूब ताकतवर हो। मगर उसका ढिंढोरा पीटने से क्या फायदा?

''मूर्ख सूई! मैं सच्चाई बखान कर रही हूँ और तू इसे ढिंढोरा पीटना कहती है।''

''ढिंढोरा ही तो है। भला बता, तू अपनी किस ताकत की बात कर रही है?'' सूई ने सीधा सवाल किया।

''अरी नासमझ, तू जानती नहीं, मैंने कई वीर योद्धाओं को अपनी ताकत से धराशायी कर दिया है, उनके सिर को धड़ से बिल्कुल अलग कर डाला है।'' तलवार घमंड से आगे बोली, ''बड़े–बड़ों के हौंसले मेरे सामने पस्त हो जाते हैं। समझी।''

''खूब समझी!'' सूई संयत स्वर में बोली, ''अब यह बता, तूने आज तक कितने सिरों को धड़ों से अलग किया है?''

''सैकड़ों,'' तलवार गर्व से बोली।

"बहुत खूब!" सूई आगे बोली, "अच्छा, अब यह भी बता दो कि कितने अलग हुए सिर–धड़ को तूने आजतक जोड़ा है?"

"एक भी नहीं।" तलवार नहीं समझ पाई कि सूई क्या कहना चाहती है?

"क्या एक भी कटे सिर–धड़ को तुम जोड़ सकती हो?"

"नहीं तो!"

"मतलब कि तुम्हारी ताकत सिर–धड़ को अलग करने के काम आती है, उन्हें जोड़ने में नहीं।"

"हाँ।"

"अब बता, किसी पेड़ से उसका पत्ता तोड़ना आसान होता है कि टूटे पत्ते को पेड़ से जोड़ना?"

"तोड़ना!" तलवार के मुख से सच्चाई निकल पड़ी।

"मतलब कि तुम आसान काम कर सकती हो, कठिन नहीं। फिर तुम अपनी ताकत को ज्यादा महत्व क्यों दे रही हो? क्या यह तुम्हारी मूर्खता नहीं है?" सूई जब तलवार को अच्छी तरह समझा कर बोली तो उसे कुछ उचित जवाब नहीं सूझा। वह चुप रही।

थोड़ी देर ठहर कर सुई फिर बोली, "मैं भले ही तुम से आकार में बहुत छोटी हूँ। मगर मेरा काम कटे–फटे को जोड़ना है। एक को दूसरे से अलग करना नहीं। मेरा काम तुम नहीं कर सकती हो, कभी नहीं। याद रहे, हमारे पास जो भी ताकत है, उसका जितना हम सही उपयोग करेंगे, वही हमारी ताकत की शान है, जान है और है हमारा मान भी। ताकत का दुरुपयोग तो एक दिन हमारे अस्तित्व को ही समाप्त कर देता है। साथ ही दूसरे की नफ़रत का भी हमें कोपभाजन होना पड़ता है।"

"ठीक कह रही हो, बहन!" तलवार को सुई की समझ भरी बातें अब रूचिकर लगने लगीं।

• • •

आओ अच्छे गुण अपनायें, हँसती दुनिया पढ़े–पढ़ायें।

वर्ग पहेली

– प्रस्तुति :
विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

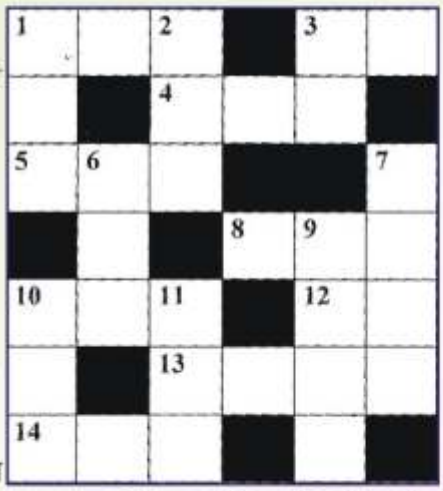

बाएं से दाएं →

1. अस्त का विपरीत शब्द।
3. लक्ष्मण और शत्रुघ्न की ..... का नाम सुमित्रा था। (माता / मौसी)
4. ..... मुरलीधरन श्रीलंका की क्रिकेट टीम का खिलाड़ी था।
5. तीन कोनों वाला यानि ..... ।
8. नासिक और मथुरा में से जो शहर गोदावरी नदी के किनारे बसा है।
10. सन् 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में पाकिस्तानी सेनापति ले. जनरल ..... ने ढाका में भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण किया था।
12. अब का विपरीत शब्द।
13. प्रायः जिस महीने में निरंकारी वार्षिक सन्त समागम का आयोजन दिल्ली में किया जाता है।
14. रजत की ट्रेन 14.00 बजे और गौरव की ट्रेन 17.30 बजे चलेगी। किसकी ट्रेन पहले चलेगी?

ऊपर से नीचे ↓

1. अवनति का विपरीत शब्द।
2. ताजमहल जिस नदी के किनारे पर स्थित है।
3. राम की .... कहीं धूप कहीं छाया यानि प्रभु की इच्छानुसार सुख–दुःख सर्वत्र है।
6. एशियाई देश दक्षिण .... की राजधानी सियोल है।
7. तानसेन मुगल सम्राट .... के दरबार का गायक था।
9. जिस महीने की चौदह तारीख को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
10. जो डरता न हो।
11. अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर की पत्नी का नाम .... महल था।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

बाल कविता : परशुराम शुक्ल

ऐसा पर्यावरण बनाएं

भारत को आदर्श बनाएं।
भारत माता के गुण गाएं।

भारत माँ के सारे बच्चे,
शालाओं में पढ़ने जाएं।

भ्रष्ट आचरण छोड़ सभी जन,
मेहनत वाली रोटी खाएं।

ऊँच–नीच के बन्धन तोड़ें,
सद्गुण जहाँ मिलें अपनाएं।

प्रतिभाओं को पहचानें हम,
इनके आगे शीश झुकाएं।

चेहरे खिले खिले से हैं सब,
ऐसा पर्यावरण बनाएं।

जन्म दिन मुबारक

अमन, आकर्ष (वाराणसी)

हिया (रायगढ़)

नम्रता (पावटा)

सुजल (रोहतक)

समनित (सैदपुर)

अभिषेक (हरखाइतपुर)

दिपेश (हिंगणघाट)

अंशिका (लखनऊ)

समता (लहरागागा)

गैबी (लहरागागा)

सिद्धान्त (औरैया)

सात्विक (कानपुर)

नवप्रीत (कलकता)

सिद्धान्त (दिल्ली)

विशेष (कटनी)

हर्ष (सलेमपुर)

सिद्धार्थ (रामगढ़ कैंट)

युवराज (बंशगोपालपुर)

निखिल (अकबरपुर)

सान्वी (हमीरपुर)

बनित (दबोह)

साक्षी (अनूपगढ़)

क्रिश (तारकपुर)

पूजा (गांधीनगर)

विनायक (सकराफरीदपुर)

जय (रेवाडी)

सूरज (अमलनेर)

चन्द्राशु (तरावड़ी) केशव (नेजाडेलाकलां) नन्दिता (दिल्ली) तुलसी (ठाणे) ईश्वाक (जयपुर)

शुभम (वाराणसी) सुकृति (जम्मू) वंशिका (दिल्ली) अनुज (कालांवाली) गौरव (जमशेदपुर)

कृष्णा (भागेश्वरी) चैताली (हिंगणघाट) ध्रुव (अमलनेर) गौरव (मलकोवाल) आस्था (चण्डीगढ़)

वेदांत (गोंदिया) हर्षित (लुधियाना) भाविका (बैरागढ़) परीरानी (कयार) वाणी (सूरत)

प्रेरणा (मोगा) गोल्डी (निहालपुर) कमल (बुलन्दपुर) नैतिक (मिरज) ध्याना (सूरत)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो प्रकाशित किये जाते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का साफ एवं छपने योग्य फोटो इस पते पर भेज सकते हैं।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म दिनांक.....वर्ष.....

पता .....

.....

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन

अजय कालड़ा

www.printmirchi.com

परन्तु अचानक उनका घोड़ा बेकाबू हो गया।
और वह घोड़े से गिर गए।
यह देख एक व्यक्ति ने उसी समय उन्हें उठाया तथा उन्हें जल पिलाया।
राजा अब ठीक अवस्था में थे।
राजा ने मदद के लिए उसका शुक्रिया अदा किया, तथा उससे उसका नाम और कार्य के बारे में पूछा।
व्यक्ति ने अपना नाम मोहन बताया और कहा कि वह बेरोजगार है।
राजा ने व्यक्ति को अपने महल में पहरेदारी करने का प्रस्ताव दिया।

अगले दिन व्यक्ति राजदरबार पहुँच गया।
राजा ने व्यक्ति को कार्य करने से पहले समझा दिया कि उसे पूरी रात पहरेदारी करनी होगी, सोना नहीं होगा।
व्यक्ति को बहुत दिन हो गये थे महल की पहरेदारी करते हुए।
एक रात राजा के महल की रोशनी बंद होते ही वह भी सो गया।

बच्चों! राजा ने उस व्यक्ति को उपहार सिर्फ जान बचाने के लिए दिया और नौकरी से उसे इसलिए निकाला गया, क्योंकि उसने अपनी ड्यूटी ठीक से नहीं निभाई। वह अपनी ड्यूटी के समय पर सो गया था।

समाचार

पूर्णा ने सबसे कम उम्र में फतह किया एवरेस्ट

हैदराबाद। आंध्र की मालावत पूर्णा दुनिया की सबसे कम उम्र में माउंट एवरेस्ट फतह करने वाली लड़की बन गई है। 13 साल 11 महीने की निजामाबाद जिले की रहने वाली पूर्णा 9वीं की छात्रा हैं। पूर्णा के साथ आंध्र प्रदेश के खम्मम जिले की कक्षा नौ की छात्रा साधनापल्ली आनन्द (16) भी थी।

स्पेलिंग बी के इतिहास में पहली बार दो भारतवंशी बने सयुंक्त विजेता

ऑक्सन हिल (मैरीलैंड)। स्पेलिंग बी प्रतियोगिता में भारतीय अमेरिकियों का जीतना कोई नई बात नहीं है। बीते कई सालों से लगातार भारतवंशी इस प्रतियोगिता पर एकछत्र राज कर रहे हैं। लेकिन बीते 52 सालों में पहली बार ऐसा मौका है, जब 'नेशनल स्पेलिंग बी चैम्पियनशिप' में एक साथ दो भारतीय अमेरिकी बच्चों को विजेता घोषित किया गया।

मूंह के छालों को दूर करे तुलसी

मुंह के छालों के लिए तुलसी की पत्तियां एक अच्छा उपचार है। तुलसी की 4–5 पत्तियां चबाएं। इससे न सिर्फ आपके छाले कम होंगे बल्कि आपको मुंह से आने वाली बदबू में भी आराम मिलेगा।

(संकलनकर्ता : बबलू कुमार)

कहानी : हरजीत निषाद

पढ़ो–लिखो, बनो महान

दूर–दूर तक फैले खेतों के बीच सड़क के किनारे लोहंगी गाँव में, तालाब के पास एक छोटा–सा घर था। यह घर जवाहर का था जो उसके माता–पिता के साथ वहाँ रहता था। जवाहर को उसके माता–पिता बहुत प्यार करते थे। करते भी क्यों न, वह बचपन से ही माता–पिता के कार्यों में सहयोग देने का प्रयास जो करता था। उसके छोटे से घर के सामने ही उसके पिता चाक पर मिट्टी के सुन्दर–सुन्दर बर्तन बनाने का कार्य करते, जिन्हें बनते हुए देखना जवाहर को बहुत प्रिय था।

जवाहर कभी–कभी सड़क की ओर चला जाता और आने–जाने वाले वाहनों को गौर से देखा करता। जवाहर जब थोड़ा बड़ा हुआ तब उसके पिता उसे लोहंगी गाँव की प्रायमरी पाठशाला में पढ़ने के लिए ले गये। प्रधानाध्यापक ने जवाहर को पहली कक्षा में भर्ती कर लिया। अब वह अपने बस्ते में किताब कापियों को सम्भाल कर रखता और

समय पर पढ़ाई करता। कुशाग्र–बुद्धि जवाहर ने अध्यापक के बताए अनुसार खूब ध्यान लगाकर पढ़ाई की। शीघ्र ही परीक्षाएं आ गईं। कक्षा के अन्य विद्यार्थियों की भाँति जवाहर ने भी लगन से तैयारी की और परीक्षा में शामिल हुआ। परिणाम घोषित हुआ तो जवाहर कक्षा में प्रथम आया। अध्यापक ने उसकी सराहना की और आगे भी ध्यानपूर्वक पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। समय मिलने पर जवाहर खेल–कूद में भी भाग लेता। पांचवी कक्षा की परीक्षाएं हुईं तो जवाहर की मेहनत रंग लाई और वह सर्वाधिक अंक लाने वाला बना। सभी ने उसकी सराहना की।

जवाहर के माता–पिता से जब लोग उनके बच्चे की प्रशंसा करते तो उनका सिर गर्व से ऊँचा हो जाता। प्रायमरी पाठशाला के प्रधानाध्यापक ने जवाहर के पिता को बुलाकर कहा कि उन्हें अब आगे की शिक्षा के लिए जवाहर को भेजना चाहिए। उच्च माध्यमिक विद्यालय धनपतगंज है, वहाँ इसे छात्रवृत्ति भी प्राप्त होगी जिसे इसकी पढ़ाई का खर्च भी आराम से निकल जायेगा। नया विद्यालय जवाहर के गाँव से चार किलोमीटर दूर था। जवाहर पैदल विद्यालय चल कर जाता और रास्ते में भी मुख्य मार्ग के साथ चलने वाली पगडंडियों का रास्ता चुनकर रास्ते में भी पढ़ते हुए जाता। इस प्रकार उसने अपने हर

पाठ को कई–कई बार पढ़कर उन्हें ठीक से याद कर लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि जवाहर को परीक्षाओं के प्रति कोई भय न रहता।

उसकी कापियां और होमवर्क का कार्य इतना साफ–सुथरा व सुन्दर होता कि उसे अति सुन्दर का 'रिमार्क' मिलता। सहपाठी बच्चे जवाहर के कार्यों से प्रेरणा लेते और उस जैसा बनने का प्रयास करते। कक्षा में हर बच्चा जवाहर से मित्रता रखना चाहता था।

जवाहर पढ़ने–लिखने में तो होशियार था ही वह अत्यन्त आज्ञाकारी, सबका सत्कार करने वाला और मृदुभाषी बालक था। उसके सद्व्यवहार के कारण कभी उसका किसी से झगड़ा नहीं होता था। वह माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सादर अभिवादन करता और उनके पांव छूकर आशीर्वाद प्राप्त करता जिससे उसे ढेरो आशीष मिलती। विद्यालय के वार्षिक समारोह में जवाहर को सम्मानित किया जाता। वहाँ भी उसके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्राप्त होती थीं।

जवाहर कठिन परिश्रम से आगे बढ़ता गया और आगे चलकर एक उच्च अधिकारी बना। उसने अपने कार्य–व्यवहार से अपने पद की शोभा बढ़ाई और सबकी प्रगति में सहायक बना।

बच्चों, हमें भी जवाहर की भाँति पढ़ाई की ओर पूरा ध्यान देना चाहिए और जीवन में सफलता प्राप्त करनी चाहिए। अच्छे आचरण और व्यवहार से सभी का प्यार प्राप्त करना चाहिए।

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 125

गुरु दी महिमा गायां बंदे कल कलेश ने होंदे दूर।
गुर दी महिमा गायां बंदे चेहरे उत्ते चमके नूर।
गुर दी महिमा गायां बंदे नैणीं सुख कलेजे ठंड।
गुर दी महिमा गायां बंदे मौहरा वी बण जाये खंड।
गुर दी महिमा गायां बंदे पापी वी हो जाण पुनीत।
गुर दी महिमा गायां बंदे होवण मुरदे वी सुरजीत।
पूरे गुर दी महिमा गाउणी पूरे गुर दी बख़्शिश नाल।
कहे अवतार पूरा गुरु छिन विच कट देंदा ए माया जाल।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में निरंकारी बाबा अवतार सिंह जी विश्व के लोगों को बता रहे हैं कि हे मानव! सद्गुरु के गुणों को गाते रहने से मन के उठा–पटक (क्लह–कलेश) समाप्त हो जाते हैं। इससे चेहरे पर आभा (नूर) चमकने लगती है; आँखों में खुशी (आराम व सुख) तथा हृदय में शान्ति (ठण्डक) मिल जाती है।

गुरु की महिमा गाने से ज़हर (मौहरा) भी अमृत (खंड) बन जाता है और पाप–कर्म करने वाला भी पवित्र हो जाता है। मन का ज़हर समाप्त होने से पवित्रता आ जाती है।

गुरु की महिमा गाने से मृत (मुर्दा– यहाँ मुर्दे का अर्थ है निष्क्रिय) में भी ऊर्जा भर जाती है, वह जीवित (सुरजीत, ऊर्जावान) हो जाता है।

अन्त में बाबा अवतार सिंह जी फरमा रहे हैं कि सद्गुरु की कृपा से यह झूठ (मायाजाल) समाप्त हो जाता है व इसी की कृपा (बख़्शिश) द्वारा ही यह सब सम्भव है।

सब तारों से न्यारा

यों तो कितने तारे नभ में,
सब से प्यारा ध्रुवतारा।

एक जगह रहता है हरदम
खूब चमकता रहता चमचम।
सबको दिशा दिखाने वाला,
सब तारों से है न्यारा।।

हम यह बादल से देंगे कह,
तुम्हें छिपाए कभी नहीं वह,
भूले को पथ रहे दिखाता,
सदा तुम्हारा उजियारा।।

कभी न तुमको थकना है

होकर बड़े बनोगे क्या तुम,
सैनिक, डॉक्टर या अफसर।
वायुयान की सैर करोगे,
या विमान चालक बन कर।।

चाहे जो भी बनो तुम्हें यह,
ध्यान हमेशा रखना है।
सेवा करने से औरों की,
कभी न तुमको थकना है।।

यादों के झरोखे से ...

विनय जोशी जी ने लगभग 40 वर्ष तक हँसती दुनिया का सम्पादन कार्यभार सम्भाला और अन्तिम समय तक सहजता, सरलता और सजगता से अपनी जिम्मेदारी को निभाया। आपने अपने उत्तम एवं श्रेष्ठ विचारों द्वारा हँसती दुनिया के परिवार को नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर भी ऊपर उठाया। 28 अगस्त 2013 को आप ब्रह्मलीन हो गये। हँसती दुनिया परिवार आपको शत्–शत् नमन् करता है।

– सम्पादक

विनय जोशी जी बचपन से ही शान्त, सौम्य और विनम्र स्वभाव के धनी थे और जीवन के आखिरी पड़ाव तक वे ऐसे ही रहे। उन्हें कभी गुस्सा करते नहीं देखा गया यदि कभी क्रोध आता भी होगा तो वे जहाँ बैठे होते थे वहाँ से थोड़ी देर के लिए उठ जाते थे और फिर हँसते हुए वापस आकर बैठ जाते। मुस्कराना ही उनका जीवन था।

एक दिन हम बैठे स्कूल–कॉलेज के समय की बातें कर रहे थे। मैं उन्हें सुनाती जा रही थी, वे हँस रहे थे, फिर मैंने कहा– आप भी कुछ अपने बारे में बताएं। उन्होंने कहा– मेरा जीवन तो गुरु के प्रति ही समर्पित रहा है, इसके सिवाय बाहर की दुनिया का मुझे कुछ भी पता नहीं।

मैंने पूछा– ऐसा क्यों? वे कहने लगे महापुरुषों के घर जन्म हुआ, पापाजी (पूज्य निर्मल जोशी) बड़े विद्वान व दार्शनिक थे और मम्मीजी की सिखलाई संस्कार रूप में मिली घर पर आने वाले उनके साथी भी विद्वान सन्त ही होते थे, माहौल पूरा ही धार्मिक था। अक्सर घर पर सर्वश्री मान सिंह 'मान' जी, हरदेव सिंह जी 'अलमस्त', जोगिन्दर सिंह जी 'शान्त', कमल जी, कपिला जी, जे. आर. डी. 'सत्यार्थी' जी इन सभी महापुरुषों के बीच में बैठकर बातचीत एवं आध्यात्मिक चर्चा हुआ करती थी और हम तीनों भाई–बहन सुनते रहते थे। इसलिए उनका व्यापक असर मुझ पर भी पड़ा।

युवावस्था में विनय जी अपने साथियों के साथ संगत के लिए दूसरी कालोनियों में साइकिलों पर जाते। वहाँ पर दरियां बिछाते, सफाई करते, स्टेज लगाते फिर महापुरुषों के आने से पहले अवतार बाणी पढ़ना शुरू कर देते थे। जब वहाँ के युवाओं ने यह सब देखा तो वे भी समय से पहुँचकर सेवा करने लगे। विनय जी कहते थे कि हमने कभी किसी नौजवान से कुछ नहीं कहा केवल 'प्रैक्टीकल' करके दिखाते थे।

जब बालसंगत की शुरूआत हुई उसमें भी बच्चों को खेल–खेल में ही सब कुछ सिखाते थे। बच्चों के लिए स्कूल भी खोला। निरंकारी यूथफोरम में सक्रिय भागीदारी निभाई।

एक बार किसी व्यक्ति ने उनसे व्यंग्य में पूछा– विनय जी, आपके मिशन में सभी एक–दूसरे को महापुरुष क्यों कहते हैं? आपको क्या पता है कि सामने वाला कैसा है? वह सन्त है भी या नहीं, क्या पता?

इस पर विनय जी ने बड़ी सहजता से एक दृष्टांत सुनाते हुए कहा कि किसी राज्य में एक राजा का राज्याभिषेक हुआ और उसे सभी के आशीर्वाद भी मिले। वहाँ पर अनेकों ऋषियों–मुनियों को भी बुलाया गया था। सभी ने उस राजा को आशीर्वाद प्रदान किया और शक्ति दी, साथ ही कहा कि हे राजन्! तुम बड़े शक्तिशाली हो, बलशाली हो, राज्य का तथा प्रजा का ध्यान रखने वाले हो, तुम्हारे कारण प्रजा में खुशहाली होगी। तुम बड़े दयावान हो; तुम अन्नदाता हो; प्रजा की रक्षा करने वाले हो।

राजा हैरान हुआ और कहने लगा– हे ऋषि–मुनियों अभी तो मैं राजा बना हूँ और अभी से आप मुझे शक्तिशाली, अन्नदाता कहने लगे हो और कितने ही विशेषणों से सुशोभित कर रहे हो। मैंने तो अभी कुछ किया ही नहीं है।

ऋषि–मुनि कहने लगे, हम ऐसा इसलिए नहीं कह रहे हैं कि ये गुण तुम में हैं। बल्कि हम इसलिए कह रहे हैं कि ये सभी गुण हम आप में देखना चाहते हैं। इसलिए आपको याद करा रहे हैं ताकि राज–पाट संभालने पर यह बातें आप याद रख सकें।

इस कहानी की तरह ही हम सामने वाले को महापुरुष कहते हैं। उनके व्यवहार में, जीवन में सभी गुण होने चाहिएं और अपने सद्गुरु के प्रति समर्पित होकर अपना जीवनयापन करें इसलिए हम शुरू से ही उन्हें महापुरुष जी कहना शुरू कर देते हैं।

उनके इस तरह समझाने पर वह व्यक्ति सरलता से संतुष्ट हो गया।

धर्मपत्नी होने के कारण मुझे उनके साथ रहने का अधिक अवसर मिला और उनसे मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका भी मिला। विनय जी से कुछ महापुरुष शंका समाधान भी करते थे क्योंकि प्रश्न किसी भी **Field** का हो, वे उसका जवाब बड़े ही सहज भाव में दे देते थे। ऐसे थे हरमन प्यारे हँसती दुनिया के भैया जिन्हें हम भुलाये नहीं भूल पाते। उन्हें हमसे बिछुड़े हुए एक वर्ष हो गया। वे 28 अगस्त 2013 को हमें छोड़कर चले गये परन्तु उनकी बताई हुई बातें, हमें आज भी जीवन का रास्ता चलाने में सहायक बन रही हैं।

– शिखा जोशी

भारत में सबसे बड़ा, ऊँचा और लम्बा

★ सर्वोच्च पुरस्कार	:	भारत रत्न
★ सर्वोच्च वीरता पुरस्कार (नागरिक)	:	अशोक चक्र
★ सर्वोच्च वीरता सम्मान (सैनिक)	:	परमवीर चक्र
★ सबसे ऊँची चोटी	:	के–2 गाडविन ऑस्टिन (8611 मीटर) जम्मू–कश्मीर
★ सबसे लम्बी नदी भारतीय उपमहाद्वीप में	:	ब्रह्मपुत्र (चीन, भारत, बांग्लादेश) 2900 कि.मी.,
★ सबसे ऊँचा झरना	:	गरसोपा (कर्नाटक, 292 मीटर)
★ सबसे लम्बी रेलवे सुरंग	:	मंकीहिल से खण्डाला (2100मी.)
★ सबसे बड़ा डेल्टा	:	सुंदरवन (बंगाल, विश्व में प्रथम)
★ सबसे लम्बी सड़क	:	ग्राण्ड ट्रंक रोड (2400 कि.मी.)
★ सबसे ऊँचा बांध	:	भांखड़ा बांध (पंजाब 740 फीट)
★ सबसे लम्बा बांध	:	हीराकुण्ड (उड़ीसा, महानदी पर)
★ सबसे बड़ा रेगिस्तान	:	थार (राजस्थान)
★ सबसे लम्बी सड़क सुरंग	:	जवाहर सुरंग (जम्मू–कश्मीर, लगभग 3 कि.मी.)
★ सबसे लम्बा रेलवे प्लेटफार्म	:	खड़गपुर
★ सबसे बड़ा गुम्बद	:	गोल गुम्बद (बीजापुर)
★ सबसे ऊँची मीनार	:	कुतुबमीनार (दिल्ली)
★ सबसे बड़ा चिड़ियाघर	:	जुलोजिकल गार्डन, (अलीपुर, कलकत्ता)

– संग्रहकर्त्ता : भारतभूषण शुक्ल (खलीलाबाद)

दो बाल कविताएं : अंकुश्री

बगुला

पतली गरदन
छरहर टांग
उड़ता कम है
भरता छलांग।

उजले तन पर
पीत है रंग
शिकार पकड़ना
अलग है ढंग।

ध्यान लगाये
जल में रहता
मछली देख यह
तुरंत झपटता।

इंतजार का
इसका ज्ञान
मशहूर हुआ
बगुले का ध्यान।

सारस

साइबेरिया से
उड़ता जाये
बर्फ गिरे तो
भारत आये।

जल बीच छिपा
नीड़ बनाता
लकड़ी लेकर
नाच दिखाता।

होता इसको
बस एक बच्चा
छोटा कुटुम्ब
सुख हो सच्चा।

सिर पर इसका
रंग है लाल।
इसकी जोड़ी
होती कमाल।

बाल कहानी : ओमदत्त जोशी

दुष्ट न छोड़े दुष्टता

एक गाँव था, मानपुरा। उसके पूर्व दिशा में एक बहुत बड़ा पीपल का पेड़ था। उस पर चिड़ा, तोता, और कौआ रहा करते थे। तीनों में घनिष्ट मित्रता थी। तीनों प्रातःकाल होते ही अपने–अपने खाने की खोज में निकल जाते और अपना पेट भरकर शाम होते–होते वापस पेड़ पर अपने घोंसले में आ जाते। कौआ चालाक था, फिर भी दोनों मित्र उससे मित्रता निभा रहे थे।

एक दिन की बात है कि पास के गाँव में कुछ चोर रात्रि को चोरी करने आये। वे एक सेठ के घर से रुपये, पैसे, गहनों के साथ–साथ मिठाई के चार लड्डू भी चुरा लाये। चोर उसी वृक्ष के नीचे बैठकर चोरी के सामान का बंटवारा कर रहे थे। उसी समय गाँव वालों के जाग जाने से चोर मूल्यवान सामान, रुपये–पैसे लेकर तो भाग गये। लेकिन शीघ्रता में मिठाई के लड्डू वहीं भूल गये। मिठाई के लड्डू प्लास्टिक की थैली में बँधे थे। प्रातःकाल होते ही सर्वप्रथम कौए ही दृष्टि उन लड्डुओं पर पड़ी। उसे पेड़ से नीचे उतरते देखकर तोता भी पेड़ से नीचे आ गया। थोड़ी देर में चिड़ा भी नीचे आ गया। तब कौआ अपनी

तिरछी नजर से लड्डुओं की थैली के चारों ओर चक्कर लगा–लगा कर देखने लगा । सभी कोणों से नजर घुमाकर देखने पर उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि प्लास्टिक की थैली में मिठाई के चार लड्डू हैं। अब उसने थैली को खोलते हुए कहा– "देखो मित्रों! यह मिठाई के चार लड्डू हैं, शायद कोई दानी अपने लिए छोड़ गया है। अब समस्या यह है कि हम हैं तीन और लड्डू हैं चार! एक लड्डू अधिक है, यह किसे मिले, यही मैं सोच रहा हूँ।

कौए की बात सुनकर तोते ने मुस्कुराते हुए कहा– "कौए काका! तुम्हारा शरीर हम दोनों से बड़ा है। अतः तुम्हें ही चौथा लड्डू मिलना चाहिए।

कौआ चौथा लड्डू खाना तो चाहता था लेकिन वह किसी का अहसान नहीं लेना चाहता था। वह किसी अनोखी चाल से ही उस लड्डू को खाने का उपाय सोच रहा था। ईमानदारी दिखाते हुए बोला– 'राम–राम! ऐसा अन्याय मैं नहीं कर सकता हूँ भाईयो! बड़ा हुआ तो क्या हुआ, अधिकार तो सभी का बराबर है। इसके लिए कोई उपाय सोचना पड़ेगा।

इतने में चिड़ा अपनी चोंच पर जीभ फेरते हुए बोला– "कौआ काका" हम दोनों मित्र कह रहे हैं कि चौथा लड्डू आपका ही है। हमें तो एक–एक मिल रहा है, वही बहुत है, आप किसी उपास–सुपाय के चक्कर में मत पड़िये।"

लेकिन कौआ चालाक था। उसने कहा– नहीं! नहीं!! मैं कोई पेटूराम थोड़े ही हूँ। मेरा तो एक सिद्धान्त है कि –

बाँट–चूटकर खाना और बैकुण्ठ में जाना।

थोड़ी देर सोचकर कौआ फिर बोला– एक विचार मेरे मस्तिष्क में आ रहा है। यदि आप लोगों को स्वीकार हो तो बताऊँ!

चिड़े और तोते ने बड़ी उत्सुकता से पूछा– हाँ–हाँ, बताओ ना।

कौआ गम्भीर होकर कहने लगा– "देखो मित्रों! हम तीनों आधे घण्टे के लिए लड्डूओं के पास सो जाते हैं। जिसे सुन्दर स्वप्न आयेगा उसे ही चौथा लड्डू खाने को दिया जाएगा।

तोता और चिड़ा भोले थे। अतः उन्होंने कौए की बात को मान लिया। तीनों लड्डुओं की थैली के पास सो गये। कौए को तो दोनों को सुलाने का बहाना चाहिए था। उसके मुँह में लार टपक रही थी, उसे नींद कहाँ आ रही थी? तोते और चिड़े को जब नींद आ गई तो कौए ने चुपके से एक लड्डू उठाया और दूर जाकर लड्डू को खाकर वापस पेड़ के नीचे आ गया। फिर नींद से उठने का बहाना बनाकर अंगड़ाई लेता हुआ दोनों को उठाने लगा– "अरे भाई! उठो ना, आधे घण्टे से ज्यादा समय हो गया है।"

तोता और चिड़ा आँखे मलते हुए उठे। ज्योंहि उनकी नजर लड्डुओं पर पड़ी तो देखा कि तीन ही लड्डू हैं। तोते ने आश्चर्य से पूछा– "कौए काका! यह क्या हुआ? मिठाई के लड्डू तो चार थे, ये तीन कैसे रह गये?"

कौए ने मुस्कुराते हुए कहा– "वही तो मैं आप लोगों को बताने जा रहा हूँ। हम सब यह निश्चय करके सोये थे कि जिसको भी सुन्दर सपना आएगा वही चौथा लड्डू खायेगा...।"

चिड़ा, चिड़चिड़ाते हुए बीच में ही बोल उठा– "अभी तो हम नींद से उठे हैं। अपने–अपने सपनों का वर्णन करेंगे, फिर निश्चय होगा कि किसका सपना सुन्दर है। उसी को चौथा लड्डू मिलना चाहिए। उसे तो पहले ही कोई खा गया, ऐसा मालुम होता है।

कौआ बीच में ही हँसता हुआ बोला– "अरे भाई! आप लोग मेरी बात तो पूरी सुनते ही नहीं हो, अपनी ही अपनी हांक रहे हो? वही घटना तो मैं आप लोगों को सुनाने जा रहा हूँ। अब ध्यान से सुनो– आप लोगों के साथ मैं भी सो गया। नींद आते ही मुझे सपना आया, इसमें साक्षात् हनुमान जी के दर्शन हुए। उन्होंने मुझे उठाया और कहा– उठ चौथा लड्डू खाकर सो जा।"

इस पर मैंने हाथ जोड़कर प्रार्थना की– हे महावीर! इसी पर विवाद चल रहा है और आप मुझे खाने को कह रहे हो।

इस पर हनुमान जी क्रोधित होकर अपनी गदा उठाकर कहने लगे– बेकार की बातें सुनने का मुझे समय नहीं है। इसे खाता है कि नहीं? मैं उनके क्रोध और गदा की मार के भय से भयभीत हो गया और वह चौथा लड्डू, मुझे मजबूरन खाना ही पड़ा।

ऐसा सुनते ही दोनों को कौए पर बहुत क्रोध आया। उन्होंने कहा "हमें आज ज्ञात हुआ कि वास्तव में तुम चालाक हो। सब पक्षियों ने तुम्हारी बुराई की थी लेकिन हमने तुमसे मित्रता की, ताकि तुम में अच्छे गुण आ सकें। सच्ची मित्रता निभा सको लेकिन तुम कपटी और धोखेबाज निकले। आज से हमारी तुम्हारे साथ मित्रता समाप्त है। जो प्राणी अपने दोस्तों के साथ छल–कपट करता है उसका कोई मित्र नहीं बन सकता।" ऐसा कह कर तोता और चिड़ा, अपना–अपना लड्डू लेकर दूर एक नीम के पेड़ पर जा बैठे, वहीं उन्होंने अपने घोंसले बना लिये।

कौआ शर्म से अपना मुँह लटकाये, उनकी तरफ दीन भाव से टुकर–टुकर देख रहा था। अब वह अपने किये पर पछता रहा था कि यदि मैं ऐसा नहीं करता तो मेरे मित्र मुझसे नाता नहीं तोड़ते।

अनमोल मोती

संग्रहकर्त्ता : किशोर डैनियल

★ जो किसी को डराता नहीं, वह किसी से डरता भी नहीं किन्तु जो दूसरों को डराते हैं वही दूसरों से डरते हैं।

– महात्मा गाँधी

★ यदि भारतीय नारी अपना धर्म छोड़ देती तो भारतीयता अब तक नष्ट हो गई होती।

– स्वामी विवेकानन्द

★ जो तुम्हारी बातों को सुनना चाहे उन्हीं को अपनी बातें सुनाओ।

★ जैसे प्रकाश ही अन्धकार को दूर कर सकता है वैसे केवल ज्ञान रूपी रोशनी से ही अन्धकार अर्थात् अज्ञान रूपी तिमिर दूर हो सकता है।

★ अवगुण नाव के छेद के समान हैं जो छोटा है या बड़ा एक दिन उसे डूबो देगा।

– कालिदास

पीले मीठे आम

मीठे–मीठे पीले आम।
फलों का राजा रसीला आम।।

गरमी का फल है आम।
रस बनाओ या फिर चूसो आम।।

खाओ आम खिलाओ आम।
चाहे दोपहर हो या हो शाम।।

पंछी

कोयले कुहके कूं–कूं–कूं।
चिड़िया चहके चूं–चूं–चूं।

चिड़िया दाना लाती है।
दाने बच्चों को खिलाती है।

अपना ध्यान बिसर कर वह,
बच्चों की सेवा करती है।

भैया से पूछो

– अमनप्रीत (काईनोर)

प्रश्न : 'चिकने घड़े' का क्या मतलब है?

उत्तर : यह एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है ऐसा व्यक्ति जिस पर किसी भी बात का असर न हो। जिस प्रकार चिकने घड़े पर पानी की एक भी बूंद नहीं ठहरती। इसी प्रकार के चरित्र वाले व्यक्ति को चिकना घड़ा कहते हैं।

– महन्थ राजपाल (उटरूकला)

प्रश्न : भैया जी, सेवा, सुमिरण की संक्षिप्त परिभाषा क्या है?

उत्तरः सेवा : किसी के प्रति समर्पित होकर प्रतिफल की इच्छा के बिना किये जाने वाले कर्म सेवा कहलाते हैं।

सुमिरण : 'स्मरण' अर्थात् निरंतर याद करने को सुमिरण कहते हैं।

सत्संग : सत्य (ईश्वर) का संग करना सत्संग है यद्यपि प्रचलित भाषा में लोगों का समूह मिलकर प्रभु यश करे तो उसे सत्संग कहते हैं।

– के. के. नागपाल (खण्डवा)

प्रश्न : परमात्मा की ओर झुकाव की कौन–सी श्रेष्ठ अवस्था है?

उत्तर : साकार सद्गुरु की कृपा का पात्र हो जाना।

– रिम्पी भट्टल (रोपड़)

प्रश्न : भैया जी, सुमिरण करते समय मन एकाग्र नहीं रहता। उस समय क्या करना चाहिए?

उत्तर : थोड़ा बोल–बोल कर व सद्गुरु के रूप में निरंकार को देखें तो ध्यान एकाग्र हो जायेगा; सुमिरण निरंतर होता जायेगा।

– अनुरेश (जलगाँव)

प्रश्न : भैया जी, बड़ों को तू कहना अशिष्टता है, फिर सर्वशक्तिमान परमात्मा को 'तू ही निरंकार' क्यों कहते हैं?

उत्तर : 'तू' शब्द वास्तव में सबसे निकट वाले तथा सबसे प्यारे के लिए ही प्रयोग किया जाता है। भगवान से निकट व प्यारा दूसरा कोई हो ही नहीं सकता। इसलिए 'तू' शब्द का प्रयोग किया जाता है। परन्तु सामाजिक रिश्तों में 'तू' अपने से छोटों के लिए ही प्रयोग होता है।

– अमिता (वडसा)

प्रश्न : भैया जी! आज हर ओर ईर्ष्या, वैर, नफ़रत बढ़ती जा रही है। सबमें अहंकार आ रहा है। इससे कैसे खुद को तथा दूसरों को बचायें?

उत्तर : नियमित सत्संग करें व करवायें।

– सलमान मेनन (विदिशा)

प्रश्न : किसी को कब तक दोस्त मानना चाहिए?

उत्तर : दोस्त बनाने से पहले ये सब सोचा जाता है। दोस्त अगर एक बार दोस्त बन गया तो पूरी उम्र दोस्ती निभानी चाहिए।

प्रश्न : भैया जी, मानव का स्वभाव लोभी क्यों होता जा रहा है?

उत्तर : जिन्हें अच्छे संस्कार प्रारम्भ से ही नहीं मिल पाते वे लोभी हो जाते हैं।

प्रश्न : इन्सान संयम कब खो बैठता है?

उत्तर : अपनी सामर्थ्य की सीमा के पार होते ही इन्सान ऐसा कर बैठता है। इसलिए तो कहा जाता है–अपनी सामर्थ्य की सीमा बढ़ाएं ताकि संयमी बन सकें।

– अनिल कुमार (बउड़िया)

प्रश्न : 'विद्या ददाति विनयम्' कहाँ तक सत्य है?

उत्तर : सौ प्रतिशत। हाँ अधूरी विद्या अहंकार को जन्म देती है। अहंकार विनयशीलता के विपरीत भाव है।

– ज्योति, गगन खनेजा (कलानौर)

प्रश्न : भैया जी इन्सान को गुस्सा क्यों आता है?

उत्तर : अपनी सामर्थ्य की कमजोरी को न पहचान पाने के कारण।

संग्रहकर्ता : राजेश कुमार (लखनऊ)

भारत रत्न से सम्मानित विभूतियां

1954 : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णनन, चक्रवती राजगोपालाचारी, डॉ. चन्द्रशेखर वेंकटरमण

1955 : डॉ. भगवानदास, डॉ. मोक्ष गुंडम विश्वेश्वरैया, पं जवाहर लाल नेहरू

1957 : गोविन्द बल्लभ पंत

1958 : डॉ. धोंडो केशव कर्वे

1961 : डॉ. बिधान चन्द राय, पुरुषोत्तमदास टंडन

1962 : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

1963 : डॉ. जाकिर हुसैन, डॉ. पांडुरंग वामन काणे

1966 : लाल बहादुर शास्त्री

1971 : इंदिरा गाँधी

1975 : वी. वी. गिरी

1976 : के. कामराज

1980 : मदर टेरेसा

1983 : विनोबा भावे

1987 : खान अब्दुल गफ्फार खाँ

1988 : मारूदुर गोपालन रामचन्द्रन

1990 : भीमराव अम्बेडकर, नेल्सन मंडेला

1991 : राजीव गाँधी, वल्लभ भाई पटेल, मोरारजी देसाई

1992 : मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, सत्यजीत राय, जंहागीर रतन जी दादा भाई टाटा,

1997 : डॉ. अब्दुल कलाम, गुलजारी लाल नंदा, अरुणा आसफ अली

1998 : एम.एस. सुब्बालक्ष्मी, चिदम्बरम सुब्रहमण्यम, जयप्रकाश नारायण,

1999 : अमर्त्य सेन, गोपीनाथ बोवदोलोई, रविशंकर

2001 : लता मंगेशकर, उस्ताद बिस्मिल्ला खान

2008 : पं. भीमसेन जोशी

2014 : सचिन तेंदुलकर, सी. एन. आर. राव

नरेन खरगोश पढ़ने–लिखने में बहुत तेज था। वह हमेशा अपनी क्लास में प्रथम आता था। स्कूल के अध्यापकगण उसे बहुत मानते थे। नरेन भी अपने अध्यापकगण का बहुत सम्मान करता था परन्तु नरेन पढ़ने–लिखने में जितना ही तेज था सामाजिक कार्यों में वह उतना ही पिछड़ा था। कारण यह था कि वह समाज से दूर रहता था। समाज में किस तरह उठना–बैठना है, किससे कैसे बातें करनी है, इस मामले में वह बिल्कुल नया था। इसलिए समाज में उसकी कोई खास प्रतिष्ठा नहीं थी। एक दिन नरेन अपने घर के अगले भाग में चारपाई पर बैठा सोच रहा था कि लोग उससे कतराते क्यों हैं? जिस तरह वह स्कूल के अध्यापकों के बीच वह स्नेह व आदर की दृष्टि से देखा जाता है। समाज के लोग उसको स्नेह व प्यार की दृष्टि से क्यों नहीं देखते? यह बात उसके दिल में बार–बार टीस रही थी।

नरेन को उदास बैठा देख उसी रास्ते से गुजर रहे चंकी बंदर ने नरेन से पूछा– क्या मुसीबत आ फंसी है नरेन? ये उदासी क्यों?

चंकी की बातें सुन नरेन ने उदास स्वर में कहा– चंकी भैया, जैसी प्रतिष्ठा मुझे स्कूल के अध्यापकों से मिलती है, वैसी ही प्रतिष्ठा समाज के लोगों के द्वारा नहीं मिलती क्यों?'

नरेन की बातें सुन चंकी ने जवाब दिया– 'पढ़ने–लिखने में तेज हो इसलिए स्कूल के अध्यापकगण तुम्हारा आदर व स्नेह करते हैं, उसी तरह समाज के कार्यों में तेज–तर्रार हो जाओगे तो समाज के लोग भी तुमको आदर व स्नेह की दृष्टि से देखेंगे

पर कैसे आदर पाऊंगा समाज में? इस मामले में तो मैं बिल्कुल नया हूँ।

समाज के लोगों से सम्पर्क करो।

इससे क्या होगा?

समाज के बारे में जानकारी मिलेगी।

सम्पर्क तो गाँव–घर के लोगों से ही साधना पड़ेगा ना!

'हाँ' चंकी ने कहा– पर विशेष जानकारी व उच्च कोटि की प्रतिष्ठा पाना चाहते हो तो इसके लिए तुमको विशेष दौड़–धूप करनी होगी।

वो क्या? नरेन उतावला हो उठा।

यही कि तुम रोज एक नये व्यक्ति से सम्पर्क साधो, नरेन बोला– क्योंकि

यदि तुम सीमित व्यक्तियों से मिलोगे तो सीमित मात्रा में ही ज्ञान से अनुभव की प्राप्ति होगी। पर दायरा जैसे–जैसे बढ़ाओगे ज्ञान व अनुभव के मामले में तुम्हारा कोई मुकाबला नहीं कर सकता क्योंकि नये–नये व्यक्तियों से सम्पर्क करोगे यदि वे थोड़ी–थोड़ी भी नई–नई जानकारी देंगे, तो वह जमा होकर एक दिन सागर बन जाएगी।

चंकी बातें नरेन खरगोश की समझ में आ गई थी। वह रोज नये–नये व्यक्तियों से सम्पर्क करता। कुछ दिनों में ही नरेन की समाज में प्रसिद्धि होने लगी। अध्यापकगण के साथ समाज के लोग भी नरेन को स्नेह व आदर देने लगे थे। ■

पहेलियां

– प्रस्तुति : गफूर 'स्नेही'

1. सोनपरी को क्या पड़ी,
बादलों पर है क्यों चढ़ी?
अच्छे–बुरे को डरायेगी
खेतों में जल बरसायेगी।

2. टीट टीट ही गाती फिरी
इसके नाम में जुड़ा हरी।
हरी न है, टांगें पीली।
पेड़ पर न बैठे नखरीली।

3. मालदार है बड़ा गवैया,
तन पर पहना सिर्फ रूपैया।
मेघ राग का है जानकार
बाग खेत की यह बहार।

4. बम नीचे, ऊपर अनार
वर्षा में दिवाली त्योहार।
छाता लेकर छत से देखो
आँखें झपकी फिर क्या देखो।

5. पांच पैर सींग से दांत,
पहाड़ की करना ज्यों बात।
राजा महाराजाओं के साथ,
युद्ध में करना दो दो हाथ।

6. एक खान ने उगली चांदी
आँगन में खेले शहजादी।
घटे बढ़े यह बहरुपिया
नाम तो बताओ भैया।

7. गोरी मेम अपना मुंह
गाड़े माटी के भीतर।
हरे कपड़ों का क्या
जो दिख रहे बाहर।

8. लाल बाई ने मुंह छिपाया
माटी कीचड़ है लिपटाया।
हरे झीले कपड़े पकड़ो
फेर दिखे इसको मुखड़ो।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

अनमोल वचन

संग्रहकर्ता : सुभाष पांचाल (बागपत)

★ शरीर मिशन नहीं, सिद्धान्त मिशन है।
– निरंकारी बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज

★ मानव की शक्ति विनाश में नहीं, कल्याण में लगे।
– निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी

★ निन्दक के लिए मोक्ष के दरवाजे बन्द है। – हजरत मौ. साहब

★ सद्गुरु की शरण ही सच्चा सुख है। – कमल जी

★ समस्त भय व चिन्ता इच्छाओं का परिणाम है। – स्वामी रामतीर्थ

प्रेरक–प्रसंग : पृथ्वीराज

श्रेष्ठबुद्धि

एक मेंढक था। वह बहुत चतुर था। एक कौआ कई दिन से उसे पकड़ने का प्रयास कर रहा था। लेकिन मेंढक उसके हाथ ही नहीं आ रहा था।

आखिर एक दिन कौए को अच्छा मौका मिल गया। मेंढक आराम से बैठा धूप सेंक रहा था। तभी कौए ने उसे पीछे से धर दबोचा और टाँग पकड़ कर आकाश में ले उड़ा। बेचारा मेंढक घबराया तो बहुत लेकिन उसने साहस नहीं छोड़ा। वह अपने मुक्त होने की युक्ति सोचने लगा।

कौआ एक पेड़ पर बैठ गया और मेंढक से बोला– "मरने को तैयार हो जाओ, मैं तुम्हें खाऊँगा।"

अब तक मेंढक काफी संभल चुका था। वह मुस्कुराता हुआ बोला– "हे कागराज! आप शायद इस पेड़ पर रहने वाली भूरी बिल्ली को नहीं जानते? वह मेरी मौसी है। यदि तुमने मुझे जरा भी नुकसान पहुँचाया तो तुम्हारे प्राणों की खैर नहीं है।

कौआ जरा भयभीत हो उठा। उसने फिर से मेंढक की टाँग पकड़ी और उड़कर एक पहाड़ी पर जा बैठा।

मेंढक की बुरी हालत थी। उसने सोच लिया कि कौआ उसे छोड़ने

वाला नहीं है लेकिन उसने अपने चेहरे पर भय की शिकन तक न आने दी।

"हे कागराज! यहाँ भी आपकी दाल गलने वाली नहीं। यहाँ भी मेरा मित्र भौं–भौं कुत्ता रहता है, यदि उसे पता चला कि तुम मुझे खाना चाहते हो तो वह तुम्हारे पंख नोच लेगा।" मेंढक न कहा।

निराश होकर कौआ वहाँ से भी उड़ा और एक नदी के किनारे जा बैठा। "मैं समझता हूँ कि यहाँ तुम्हें बचाने वाला कोई नहीं है।" कौए ने मेंढक से कहा।

बेचारे मेंढक के हाथ–पैर फूल गये थे। फिर भी वह अपनी बुद्धि बल से सोच कर बोला– "कागराज अब तो मैं आपके ही हाथ में हूँ। आप मुझे आराम से खा सकते हो। मगर कितना अच्छा होता कि तुम अपनी चोंच पैनी कर लो जिससे मुझे कम कष्ट होगा।"

कौआ मेंढक के बहकावे में आ गया। बोला– "अरे यह कौन–सी बड़ी बात है।" यह कहकर वह अपनी चोंच नदी के किनारे के एक पत्थर पर घिसने लगा।

मेंढक के लिए इतना अवसर बहुत था। उसने तुरन्त उछलकर पानी में डुबकी लगा दी, बेचारा कौआ, अपना–सा मुँह लेकर बैठ गया। तभी पानी में से एक आवाज आई– "कागराज! चोंच तो आपने पैनी कर ली। अब बुद्धि भी पैनी कर लो। तब मैं कही आप के हाथ आऊँगा।

बेचार कौआ अपनी बुद्धि पर तरस खा रहा था।

रोचक तथ्य

- मक्खी केवल 24 से 26 इंच की दूर तक देख सकती है।
- मक्खियों की एक आँख में 4000 लैंस होते हैं उसके बाद भी वे ठीक तरह से देख नहीं पाती हैं।
- मक्खियां खाने से पहले उस पर उल्टी करती है। इससे खाना सॉफ्ट हो जाता है इस उल्टी में बैक्टीरिया होते हैं।
- 3,00,000 मक्खियों पर अध्ययन के बाद पता लगा कि 'हाउस फ्लाई' अपनी बॉडी पर दो मिलियन बैक्टीरिया लादे हुए होती है।
- पेंगुइन ऐसी चिड़िया होती है जिसके पंख वाटरप्रूफ होते हैं।
- जब हम छींकते हैं तो बॉडी के सारे फंक्शन एक क्षण के लिए रूक जाते हैं, यहाँ तक कि हृदय भी।
- जो लोग अधखुली आँख से सोते हैं उनमें सपने याद रखने की संभावना ज्यादा रहती है।
- माचिस के आविष्कार से पहले सिगरेट का आविष्कार हुआ था।
- टेलीविजन देखने में जितनी कैलोरी खर्च होती है उससे कहीं अधिक ज्यादा सोने में खर्च होती है।
- उल्लू ऐसा पक्षी है जो केवल नीला रंग देख सकता है।
- बॉडी में सबसे ज्यादा मजबूत मस्सल जीभ होती है।
- फ्रांस विश्व का ऐसा देश है जहाँ पर मच्छर नहीं पाये जाते।
- 1 से लेकर 100 तक की गिनती में 1 को 21 बार लिखना पड़ता है।
- स्पेन ऐसा देश है जहाँ कपड़े पर अखबार छपता है।
- संसार में सबसे महंगी वस्तु यूरेनियम है।
- रात को सोते समय औसतन हमारा वजन 11 औंस कम हो जाता है।

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : गर्मियों में सड़कों पर पानी का छिड़काव क्यों किया जाता है?

उत्तर : वाष्पन से ठंड उत्पन्न होती है। गर्मियों में सड़कों पर किए गए छिड़काव से वाष्पन–क्रिया में तेजी आती है। दूसरी ओर, वाष्पन के लिए आवश्यक ऊष्मा सड़क से ली जाती है। अतः इस प्रक्रिया में सड़के ठण्डी हो जाती हैं। बस, इसलिए गर्मियों में सड़कों पर पानी का छिड़काव किया जाता है।

प्रश्न : सभी गैसों के गुण एक जैसे क्यों नहीं होते?

उत्तर : प्रत्येक गैस की प्रकृति भिन्न होती है। कुछ गैसे शीघ्र द्रव में बदल जाती हैं। जैसे–भाप। कुछ गैसों में गंध होती हैं, जैसे–सल्फरडाई ऑक्साइड (SO_2)। कुछ गैसें ज्वलनशील होती हैं जैसे – ऑक्सीजन (O_2)। अतः अपनी प्रकृति के कारण ही गैसें एक जैसी नहीं होती।

प्रश्न : शहद की तुलना में पानी आसानी से क्यों बहता है?

उत्तर : प्रत्येक पदार्थ की संरचना अणुओं से मिलकर होती है। अणु जितने पास–पास होते हैं, पदार्थ उतने ही ठोस होते हैं। पानी में अणु दूर–दूर होते हैं जिससे उसमें बंधन मजबूत नहीं होते और वह आसानी से बहता है। शहद में अणुओं की दूरी कम होने से बंधन मजबूत रहता है, जिससे वह आसानी से नहीं बहता। शहद को बोतल से शीघ्र निकालने के लिए गर्म करना पड़ता है।

•••

पहेलियों के उत्तर : 1. बिजली 2. टिटहरी 3. मोर 4. वज्र 5. हाथी 6. चन्द्रमा 7. मूली 8. गाजर

लेख (जानकारी) : सुप्रिया

पेड़-पौधे भी होते हैं मांसाहारी...

कुछ पौधे विचित्र प्रकार के होते हैं। जिनमें मांसाहारी, विषैले, रेशों वाले मरुस्थली, वृक्ष पर उगने वाले और अन्य उपयोगी पौधे होते हैं। कुछ पौधे छोटे कीड़े–मकोड़ों को अपना भोजन बनाते हैं। 'पिचर प्लांट' की पत्तियां पानी को इकट्ठा करके कीट को फंसाकर डुबो देती हैं। फिसलन होने के कारण कीट ऊपर नहीं आ पाता और पत्तियों से निकले इस रस में कीट का अवशोषण हो जाता है। 'वटर वर्ट' और सनड्यू की पत्तियों पर सरेस के चकत्ते होते हैं, जिससे कीट चिपक जाते हैं और इसमें घुल जाते हैं।

'वीनस फ्लाई' की पत्तियां मुड़कर फुदा बनाती है। जब कीट इस पर बैठता है, तो इसमें फंस जाता है। पौधे से रस निकलकर कीड़े या कीट को उसमें फंसाकर अपना भोजन बना लेते हैं। इनमें कुछ शूक होते हैं जो लिबलिबी का कार्य करते हैं। जब कीट या वाटरफ्ली लिबलिबी से टकराता है तो उसका अग्रभाग खुल जाता है और प्राणी उसके अन्दर चला जाता है।

विषैले पौधों में स्टिंगिंग नैटर ऐसा पौधा है जिसके ऊपर छोटे–छोटे खोखले बाल होते हैं। जब बाल त्वचा में घुसकर विष छोड़ देता है तो तेज जलन होती है या मोटे–मोटे फफोले हो जाते हैं। यह पौधा ज्यादातर अफ्रीका के जंगलों में पाया जाता है। 'आइवी' पौधा अमरीका में पाया जाता है जिसे छू लेने पर गम्भीर सूजन हो जाती है। दक्षिण अमरीकी इंडियन पौधों के कुरारी विष से अपना तीर बुझाते हैं।

घने उष्ण कटिबंधीय वनों में पेड़ों के तनों पर सूक्ष्म पौधे उग जाते हैं। इन्हें एपिफाइट या परजीवी पौधे कहते हैं। ये अपनी जड़ों के चारों ओर →

कविता : सोनिया रमोत्रा

कोयल

बागों में इक कोयल बोली,
बोले वह अति मीठी बोली।

डाल–डाल इतराती फिरती,
कभी इधर कभी उधर उछलती।

आकर बैठी आम की डाली,
बच्चे बोले कितनी काली।

आमों की है बहुत प्यासी,
खट्टे–मीठे सब चख जाती।

कभी न उसको छेड़े माली,
खुश हो बच्चे मारें ताली।

कूक–कूक सबको खुश करती,
कानों में मीठा रस भरती।

मस्ती वह उड़ती जाती,
बच्चों को है बहुत ही भाती।

जमा हुई धूल–गंदगी से पानी और भोजन प्राप्त करते हैं। अपनी पत्तियों को टोकरी से बनाकर उसमें वर्षा का पानी इकट्ठा करते हैं।

रेशे वाले पौधे उपयोगी होते हैं। फ्लैक्स पौधे से लिनन वस्त्र बनता है जो यूरोप में पाया जाता है। इसके तनों को सुखाकर रेशे अलग किये जाते हैं। जिससे अच्छे किस्म की वस्तुएं तैयार की जाती हैं। कैक्ट्स मरुस्थली पौधा है। इसके तनों से प्रकाश संश्लेषण क्रिया होती है। अमरीकी मरूस्थल में मैस्कीट की झाड़ियां पाई जाती हैं। जिनकी जड़ें पचास मीटर गहरी होती है।

पढ़ो और हँसो

बांकेलाल : डॉक्टर साहब मेरी मदद करो, मैं जब भी बात करता हूँ तो मुझे सिर्फ आवाज सुनाई देती है आदमी नहीं दिखता।
डॉक्टर : ऐसा कब होता है?
बांकेलाल : जी, फोन करते वक्त। – दिशा बिल्दानी (बड़नेरा)

होटल में बैठा एक आदमी वेटर को खुजली करते देख रहा था। आदमी ने वेटर को बुलाकर पूछा – खुजली है क्या?
वेटर ने जवाब दिया : साहेब अगर 'मीनू' में लिखा है तो जरूर मिलेगी। – काजल बिल्दानी (बड़नेरा)

कस्टमर : मुझे फोन पर धमकियां मिल रही है।
पुलिस : कौन है वो जो आपको धमकियां दे रहा है?
कस्टमर : टेलिफोन वाले बोलते हैं कि 'बिल नहीं भरोगे तो काट देंगे।'
ग्राहक : एक किलो गाय का दूध देना।
दुकानदार : लेकिन तुम्हारा बर्तन तो बहुत छोटा है।
ग्राहक : ठीक है, तो फिर बकरी का दूध दे दो।
– विरेश कश्यप (रूद्रपुर)

बस स्टॉप पर बच्चे को रोते देखकर कंडक्टर ने बस रोकी और पूछा– बेटे क्या हुआ?
बच्चा : मेरा दस का नोट खो गया है, अब मैं टिकट कैसे लूँगा?
कंडक्टर : चलो कोई बात नहीं, मैं तुम्हें मुफ्त में ले चलूँगा।
बस में बैठकर बच्चा फिर रोने लगा।
कंडक्टर : अब क्या हुआ।
बच्चा : मुझे नौ रुपये वापस चाहिए जो टिकट लेकर वापस आने थे।
– अनुपमा कोहली (जैंती)

शिवांशी : भैया हमने सुना है कि विदेशों में बच्चे चौदह–पन्द्रह साल की उम्र में ही अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं, क्या यह सच है?

मयंक : अरे दीदी, विदेशों की बात छोड़ो। देख नहीं रही हो हमारे देश में बच्चे एक साल के अन्दर ही अपने पैरों पर खड़े होकर चलने लगते हैं। – महंथ राजपाल (उटुरूकलां)

भिखारी : (कंजूस आदमी से) दो रुपये दे दो। मैंने तीन दिन से खाना नहीं खाया है।

कंजूस : दस रुपये दूंगा। पहले ये बता कि दो में खाना कहाँ मिलता है? – मोहित (भिवानी)

एक आदमी : (पुलिस से) सर मेरे घर से टी.वी. छोड़कर बाकी सब चीजें चोरी हो गई हैं।

पुलिस : चोर ने सिर्फ टी.वी. किसलिए छोड़ा होगा?

आदमी : मुझे क्या पता मैं उस समय टी.वी. पर सीरियल देख रहा था। – आलोक जयसवाल (खलीलाबाद)

संता ने बस में 2 टिकट ली।

कंडक्टर : 2 क्यों?

संता : एक खो गई तो दूसरी रहेगी।

कंडक्टर : अगर दूसरी खो गई तो?

संता : तो 'पास' कब काम आयेगा।

एक बार संता पैसे जमा करने बैंक गया।

कैशियर बोला : ये नोट फटा है, दूसरा दो।

सन्ता : मैं अपने अकाउंट में जमा कर रहा हूँ, फटा करूँ या नया तुझे इससे क्या मतलब है?

– उर्मिल लक्ष्मण गुप्ता (मालवणी, मालाड)

एक किसान ने खेत में जाने से पहले पत्नी से कहा – दोपहर का खाना ले आना।

पत्नी ने पूछा : कितनी रोटियां लाऊं।

किसान : साढ़े नौ।

पत्नी : दस ले आऊं?

किसान : तुमने मुझे इतना भुक्खड़ समझा है क्या?

– आर्यन (हरदेव नगर, दिल्ली)

जुलाई अंक रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम	:	प्रवीण कुमार 7/5, निरंकारी कालोनी दिल्ली –110009	आयु 12 वर्ष
द्वितीय	:	जेताली मनोजा कृष्णा नगर (नया कॉटन मार्किट के सामने) अमरावती	आयु 9 वर्ष
तृतीय	:	दीप शंकर रानी हर्ष मुखी रोड काशीपुर, कोलकाता	आयु 13 वर्ष

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसंद किया गया वे हैं –

मुस्कान महता (तेलीवाड़ा, भिवानी), रोज़मिन (से. 11, पंचकुला), लवीना अरोरा (किला बाजार, काशीपुर), गौरव कुमार (दलसिंह सराय, समस्तीपुर), जगरूप सिंह (अधोया, अम्बाला), हार्दिक मग्गू (मोती कालोनी, पलवल), प्रियंका, साक्षी (मारण्डा), अनीला निंबर (से. 15 पंचकुला), मेघा रानी (कैलाचक), दृष्टि कक्कड़ (प्रिंस्टन एस्टेट, गुड़गांव), आयुष दुआ (शास्त्री नगर, दिल्ली), रानी, योगिता (जोबनेर रोड, फुलेरा), गौरव सिंह (कंधईपुर घूमनगंज), शिवांगी (अरला, पालमपुर), कपिल राव (पहराजवास)।

सितम्बर अंक की रंग भरो प्रतियोगिता

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर 20 सितम्बर **तक** सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 को भेज दें। तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जाएंगे।

परिणामों की घोषणा हँसती दुनिया के नवम्बर अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ–साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं। प्रतियोगिता के परिणाम का निर्णय 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का अन्तिम और मान्य होगा।

रंग भरो

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड.....

सदस्यता प्रपत्र

मैं रुपये .....का भुगतान, **वार्षिक** ☐ **तीन वर्ष** ☐ **दस वर्ष** ☐ **बीस वर्ष** ☐ ***(किसी एक पर टिक लगायें)*** सदस्यता शुल्क, सन्त निरंकारी मण्डल के नाम चैक/मनीऑर्डर/ड्राफ्ट द्वारा भेज रहा हूं। अतः मुझे **हँसती दुनिया** ☐ **सन्त निरंकारी** ☐ **एक नज़र** ☐ ***(किसी एक पर टिक लगायें)***..... भाषा में निम्न पते पर भेजें–

नाम : .....

पिता/पति का नाम : .....आयु.....वर्ष

पता : .....

पोस्ट आफिस.....जिला.....राज्य :.....

पिन कोड : .....ब्रांच/जोन..... मोबाइल: ..... ई.मेल :.....

सदस्यता के नियम :

- चैक/मनीऑर्डर/ड्राफ्ट, सन्त निरंकारी मण्डल के नाम देय होने चाहिए,
- कृपया अपना नाम और पता साफ अक्षरों में लिखें,
- सदस्यता शुल्क सन्त निरंकारी मण्डल के HDFC SB A/C.50100050531133 NEFT/RTGS IFSC Code HDFC0000651, Branch-Sector 26, Noida में जमा अथवा ट्रांसफर भी कर सकते हैं।
- सदस्यता पत्र केवल हिन्दी और अंग्रेजी में ही भरें।

सदस्यता शुल्क :

Country	Annual	3 Years	6 Years	10 Years	LM (20 Years)
India/Nepal	₹ 100	₹ 250		₹ 600	₹ 1000
UK	£ 12		£ 60	£ 100	£ 150
Europe	€ 15		€ 75	€ 125	€ 200
USA	$ 20		$ 100	$ 150	$ 250
Canada/Australia	$ 25		$ 125	$ 200	$ 300

Note: Other Countries Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

पत्र-पत्रिकाओं की नई सदस्यता हेतु उपरोक्त प्रपत्र भर कर दिल्ली मुख्यालय को इस पते पर भेजें

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल, एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी चौक, बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009

किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क करें –

Phone: +91-11-47660200, Extn. 862, 863, 224, 225 Fax: +91-11-47660300, 27608215, Helpline: 47660360

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

सुहानी भोर

बड़ी सुहानी भोर है,
पंछियों का शोर है।

रवि की लाली देखो,
इसका रंग निराला है।

हटा अंधेरा रात का,
फैला खूब उजाला है।

धूप ने थामी डोर है,
बड़ी सुहानी भोर है।

फूलों ने खोला पट,
जाग उठा पनघट।

कलकल बहती नदी,
लेने लगी करवट।

उठी जल में हिलौर है,
बड़ी सुहानी भोर है।

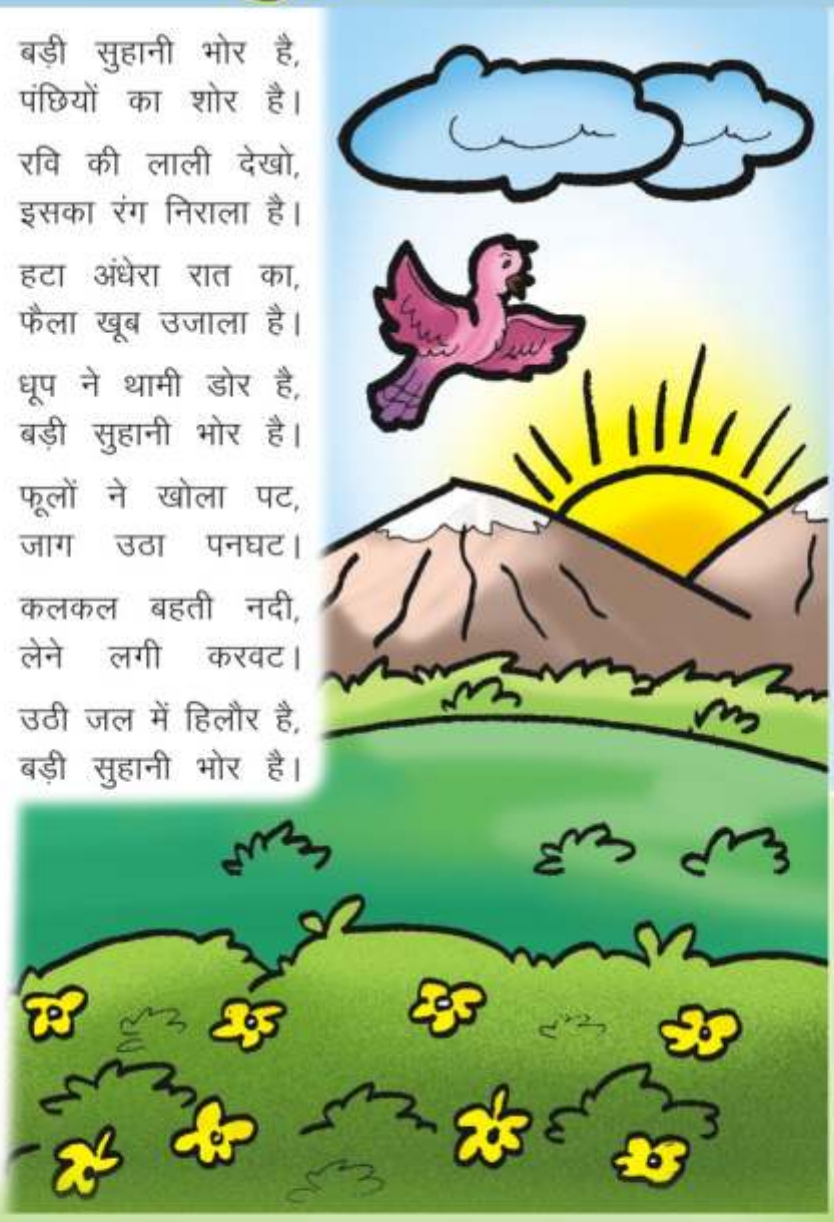

चम्पू
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
राहुल, सनी, गीता, मोहन अरे तुमने कुछ सुना?
हाँ अभी-अभी हमने अपने नाम सुने हैं। हा हा हा।
सपना, सोनू तुमने कुछ सुना?
नहीं।

क्या हुआ चम्पू?
स्कूल में एक नई मैडम आ रही है।
अरे तो इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है।
अरे ये मैडम बहुत सख्त है।
तुम्हें कैसे पता
कल आ रही है, देख लेना।

अगले दिन सुबह।
हा।
होये।
ओये।
ये क्या हो रहा है?
और एकदम से पूरी class शांत हो गई।
Good Morning Madam.
सब के सब हाथ ऊपर करके खड़े हो जाओ।
तुम लोगों को गलती की सज़ा तो मिलनी ही चाहिए।
अरे चम्पू ये मैडम तो बहुत सख्त है।

क्या बोला तुमने।
कुछ नहीं मैडम जी!
क्या नाम है तुम्हारा।
मैडम राहुल।
बाहर निकल कर मुर्गा बन जाओ।
एक घंटे के बाद। सभी बच्चे।
चम्पू कुछ कर ना।
मैं क्या करूँ।
तो फिर जो मैं बोलता हूँ। मेरे साथ बोल।
मैडम Please हमें माफ कर दो, हम आगे से कभी ऐसी गलती नहीं करेंगे।
हाथ नीचे करके अपनी सीट पर बैठ जाओ।
तुम्हे लग रहा होगा कि मैं बहुत सख्त हूँ।
जी हाँ मैडम हमें ऐसा ही लग रहा है।
बच्चों ऐसा नहीं है। हम दिल से बहुत कोमल होते हैं। बस तुम्हे सुधारने के लिए ऐसा करना पड़ता है।

फोटो फीचर

सिमरन दीदी देखो मेरी कुर्सी कितनी अच्छी है। – परेश थदानी, (वर्धा)

अरे मेरी कुर्सी तो देखो यह कितनी ऊँची है। – सिमरन (करवार)

मैं अभी बैठूंगी नहीं, मुझे अभी गार्डन घूमना है। – इशिका (अहमदाबाद)

मैं तो मम्मी के साथ घर पर ही रहती हूँ। मैं अभी चल नहीं सकती न! – आयुषि (महुआ मुकुन्दपुर)

हाँ मैं भी धीरे–धीरे चलना सीख लूंगा। फिर घूमने जाया करूंगा। – आयुष (यमुनानगर)

मुझे तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा है कि तुम लोग कैसी बातें लेकर बैठ गए। – अर्णव (कोल्हापुर)

फोटो फीचर

आज तो मोनू भैया के साथ खेलने में खूब मजा आया। हा...हा...हा.
– हर्षिता (पंचकूला)

क्या हँसती जा रही हो, हँसती दुनिया पढ़ ली है क्या, मेरी नई ड्रेस और जूते तो देखो।
– अगम (मुखर्जी नगर, दिल्ली)

मेरी बहन सहर्षा अभी बहुत छोटी है। बड़ी होकर यह भी मेरे साथ स्कूल जाया करेगी।
– गौरव
(महासमुन्द)

मुझे भी स्कूल जाना अच्छा लगता है। भैया मुझे भी स्कूल ले चलना। – ऋषिकेश (ठाणे)

मैं तो अभी छोटी हूँ, अभी खेल–कूद लूं, पढ़ाई बड़ी होकर करूंगी।
– साक्षी
(जालना)

मैं भी अभी छोटी हूँ, मैं बड़ी होकर स्कूल जाऊंगी।

फोटो फीचर

मैं तो अपनी कुर्सी पर दूसरी ओर से भी बैठ लेता हूँ।

मेरी टोपी पहनने का स्टाइल तो देखो
–प्रेरित कर्णवाल

अरे छोड़ों भी, देखो तो मेरा 'टोडी' क्या कह रहा है।

आओ दोस्त, फुटबॉल खेंले।

फुटबॉल मेरी ओर फेंको, मैं इसे हाथ से बहुत दूर फेंक दूंगा।

अरे सन्तुष्ट तुम्हारी पगड़ी तो सुन्दर लग रही है। किसने पहनाई।

मैंने पापा से पगड़ी बांधना सीख लिया है, देखो कितनी अच्छी लग रही है।
– सन्तुष्ट (सैदपुर)

कहानी : सुकीर्ति भटनागर

एकता में बल

टुन्नु बन्दर और टिन्नी बंदरिया सहज, शान्त और सरल स्वभाव के थे, पर उनके दोनों बेटे चिंकी, मिंकी बहुत ही जिद्दी और शैतान थे, इसीलिए जब से वे आनंदवन में आए थे, हर ओर खलबली मच गई थी और उनकी शैतानियों से वन की शान्ति भंग हो गई थी। जब वे हाथी दादा से पढ़ने बैठते तो पढ़ाई करने के स्थान पर पास बैठे स्कूल के दूसरे बच्चों को नोचना–खसोटना शुरू कर देते या फिर उनसे धक्का–मुक्की करते हुए उनकी हालत खराब कर देते।

कोई दिन ऐसा नहीं होता था, जब वे किसी को परेशान न करते हों। एक दिन तो चिंकी ने हद ही कर दी। कक्षा में अपने सामने बैठे बालू खरगोश की पीठ को वह देर तक कलम से कोंचता रहा, यहाँ तक कि उसकी पीठ से खून बहने लगा। दूसरी ओर मिंकी ने गिल्ली लोमड़ी को झूले से धक्का दे दिया, पर दोनों ने उफ तक नहीं की, क्योंकि चिंकी–मिंकी की शिकायत करने का साहस किसी में नहीं था। इसीलिए जितना सब उनसे डरते थे, उतना ही वे सबको डराते और तंग करते थे। जब भी कोई उन्हें समझाने की कोशिश करता तो वे उसे काट खाने को आते और मुँह चिढ़ाते हुए कहते, "तुम सब हमसे जलते हो क्योंकि न तो तुम हमारी तरह पेड़ों पर चढ़ सकते हो और न ही टहनी–टहनी फांद कर जीवन का मज़ा लूट सकते हो। देखना यदि कभी जंगल में बाढ़ आ गई तो तुम डूब जाओगे, पर हम तो मजे से पेड़ों पर झूलते हुए फल

खाते रहेंगे, हा–हा–हा।'' ऐसा कहते हुए वे पेड़ों के कच्चे–पक्के फल तोड़कर इधर–उधर फेंकने लगते।

एक दिन उनकी ऐसी ही बातें सुन कर सलोनी मैना बोली, ''क्या हर समय अपनी ही डींग हांकते रहते हो। मेरी तरफ देखो, दूर आसमान पर कितना ऊँचा उड़ सकती हूँ मैं। तुम्हारा क्या, इन पेड़ों पर अकड़े बैठे रहते हो, जो कभी भी आँधी और वर्षा से गिर सकते हैं या फिर जंगल में आग लग जाने से जल सकते हैं। अगर कभी ऐसा हो गया, तब कहाँ जाओगे बच्चू, ही–ही–ही।''

''गलत बात सलोनी, तुम तो समझदार हो। ''अपने मुँह मियां मिट्ठू नहीं बना करते।'' हीरामन तोते ने उसे समझाते हुए कहा तो वह चुप हो गई।

''पिदकिया–सी तो होती हैं ये चिड़ियां, मुट्ठी में भर भींचा नहीं कि पीं बोल जायेगी।'' ढीठ चिंकी हँसते हुए बोला तो मिंकी भी खिलखिला कर हँस पड़ा।

पिछले कई दिनों से लगातार बारिश होते रहने के कारण जंगल के आसपास के खाली पड़े मैदान में पानी भरने लगा था और श्यामा नदी भी उफ़ान पर थी। यह देख कर जंगल के राजा शेर ने सबको चेतावनी

देते हुए कहा, ''साथियो! हर कहीं पर भर रहे पानी को देखकर मुझे लगता है कि यहाँ जंगल में कभी भी पानी आ सकता है। इसलिए हमें चाहिए कि हम सभी चंपक वन चले जाएँ, क्योंकि वह जगह काफी ऊँचाई पर है। यदि हमने जल्दी ही वहाँ जाने का फैसला नहीं किया तो हो सकता है बाद में यहाँ से निकलना मुश्किल हो जाए।''

तब जंगल के बड़े बुजुर्गों ने अपनी सहमति प्रकट करते हुए कहा कि यही ठीक रहेगा, साथ ही सबने आनन्द वन से जाने की तैयारी शुरू कर दी। यह देखकर चिंकी–मिंकी को बहुत हँसी आ रही थी। ''भई हम तो कहीं नहीं जाएँगे, भला हमें पानी का क्या डर। जंगल में पानी आ जाने से डूबेगा कालू भालू, डबरू बाघ और मोटे हाथी बाबा। हम तो पेड़ों पर रहेंगे। टहनी–टहनी उछलेंगे और मीठे–मीठे फल खाते हुए चैन

की बंसी बजाएँगे,'' चिंकी ने कहा। तब जंगल के अन्य जानवरों के साथ–साथ ही उनके माता–पिता ने भी उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की, पर वे बेहद जिद्दी थे। उन्हें नहीं मानना था, सो वे नहीं माने।

''ये कहाँ किसी से मिल–जुल कर रहना पसन्द करते हैं, इनकी तो अलग ही खिचड़ी पकती है हमेशा।'' सलोनी मैना ने चिढ़ कर कहा और अपना सामान समेटने लगी। देखते ही देखते सभी जानवर चंपक वन की ओर चल पड़े। जो जानवर पेड़ों पर चढ़ना जानते थे, वे भी अपनी और अपने बच्चों की सुरक्षा की बात सोच कर उनके साथ हो लिए और शाम होने तक सारा जंगल खाली हो गया। ऐसे में हर ओर पसरा सन्नाटा चिंकी–मिंकी को डराने लगा, पर अब क्या हो सकता था। धीरे–धीरे, हर ओर फैला पानी सचमुच ही आनन्द वन को अपने में समेटने लगा। यह देख दूसरों की खिल्ली उड़ाने वाले वे दोनों जो कुछ देर पहले पेड़ों पर धमाचौकड़ी मचा रहे थे, बुरी तरह घबरा गए और तेज ठंडी हवाओं तथा कड़कती बिजली से सहम कर टहनी पर सिमटे बैठे रहे, फिर जाने कब उनकी आँख लग गई।

सुबह होते ही उन्होंने जो दृश्य देखा, उससे उनके रोंगटे खड़े हो गए। आनन्द वन पूरी तरह पानी में डूब चुका था। इससे पहले कि वे अपने बचाव के विषय में कुछ सोचते, पेड़ की टहनी टूट कर पानी में →

जानकारी : ईलू रानी

अजब दुनिया चमगादड़ की ...

पुराने किले, खंडहर मकान और सूनी हवेलियों में अक्सर चमगादड़ों का वास मिलता है। प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार चमगादड़ अक्सर उस जगह उलटे झूलते हैं, जहाँ खजाना दबा या छिपा होता है। कई लोग चमगादड़ को शुभ मानते हैं तो कई अशुभ भी।

ठण्डी जलवायु वाले स्थानों पर पाये जाने वाले चमगादड़ शीत ऋतु में गुफाओं में छिपे रहते हैं।

बच्चों को दूध पिलाने वाली माता चमगादड़ एक दूसरे से सटकर समय बिताती है इसमें उनके शरीर के ताप से आस–पास की जगह का

गिर पड़ी, जिस पर वे बैठे थे। तब वे पानी के बहाव से एक ओर को बहते हुए टहनी से दूर हो गए। अचानक वे सामने से तैर कर आते एक बड़े–से लकड़ी के गट्ठे से टकराए। तब उन्होंने उसे कस कर पकड़ लिया और उसके साथ–साथ तैरने लगे। कुछ दूर जाने पर पर गट्ठा एक बड़े पेड़ से टकरा कर रूक गया तो चिंकी–पिंकी फुर्ती से पेड़ पर चढ़ गए और अपनी जान बचाई। उन्होंने उस गट्ठे को एक बार फिर देखा, जिसमें बँधी अनेक लकड़ियाँ एक साथ तैरते हुए आगे बढ़ रही थीं। यह देख वे सोचने लगे कि गट्ठे के रूप में बँधे रहने के कारण ही वे लकड़ियाँ तैर रही हैं अन्यथा एक अकेली लकड़ी पानी के तेज बहाव में कब की डूब चुकी होती।

तब उन्होंने भी भविष्य में सबके साथ प्रेमपूर्वक रहने का दृढ़ निश्चय कर लिया, क्योंकि अब वे भली–भाँति जान चुके थे कि एकता में ही बल होता है।

● ● ●

तापमान ज्यादा नहीं गिरने पाता। यदि कोई उन्हें छेड़ देता है तो पूरा समुदाय बिखर जाता है और तापमान गिरने से बहुत सारे बच्चों के मरने का डर बना रहता है।

कई मुगल शासकों ने तो चमगादड़ों के लिए विशाल हवेलियां भी बनवाई थी, ताकि चमगादड़ उन में आराम से रह सके, दरअसल उस सयम यह भ्रम था कि चमगादड़ पालने से धन की सदा बढ़ोतरी होती है तथा कोई विपत्ति भी नहीं आती।

10वीं सदी के मध्य में रोम के एक शासक ने चमगादड़ों के वास पर खुदाई कराई तो उसे बेशुमार दौलत मिली थी, तब से यह चर्चा सर्वत्र फैल गई कि चमगादड़ दबे खजाने का संकेत भी बताते हैं, खैर ...

प्रकृति की गोद में तो कई किस्म के चमगादड़ हैं, लेकिन आपने खून चूसने वाले चमगादड़ों के बारे में पढ़ा–सुना नहीं होगा। आइये इन चमगादड़ों के अजीबो गरीब कारनामों से आपका परिचय कराते हैं।

दुनिया में खून चूसने वाले चमगादड़ सिर्फ मैक्सिको में ही देखने को मिलते हैं। ये चमगादड़ प्रतिवर्ष दस लाख जानवरों को अपना शिकार बनाते हैं। इन रक्तचूसक चमगादड़ों का मुख्य शिकार घोड़े, कुत्ते, सुअर होते हैं। ये कभी–कभी मनुष्यों पर भी अपने दांत गड़ा देते हैं।

इन चमगादड़ों का भार लगभग 28 ग्राम तथा डैनों का विस्तार 30 सेंटीमीटर होता है।

वैसे ये चमगादड़ गर्म खून वाले जानवरों को ही अपना शिकार बनाते हैं। इनके चाकू जैसे 20 दांत होते हैं। जिसे वे अपने शिकार के शरीर में धंसा देते हैं। इनके पंजे बहुत गद्देदार होते हैं।

इन्हीं चमगादड़ों में 'डिम्बी' नस्ल के चमगादड़ भी होते हैं, जो समूह में घूमते हैं। पचासों चमगादड़ एक साथ मिलकर ये हाथी की जान भी ले लेते हैं। हाथी इन्हें देखते ही चिंघाड़ने लगता है व सूंड ऊँची कर तेजी से दौड़ने लगता है।

आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया

बड़ी रोचक बड़ी ही प्रेरक।
हँसती दुनिया ज्ञानवर्द्धक।
यह बाल पत्रिका निराली।
सबको पसन्द आने वाली।
हर पढ़ने वाला परिवार।
सीखे इससे शिष्ट विचार।
हँसती दुनिया नित नई।
छुए बुलन्दियों की ऊँचाई।
आओ जाने इसका रहस्य।
बनकर आजीवन सदस्य।

– राम अवध राम (गुरैनी, गाजीपुर)

गर्मी की छुट्टियों का सही मजा लुटाती हँसती दुनिया का जून अंक पढ़ा। हमेशा की तरह 'सबसे पहले' लेख ने सद्विचार का दीप जलाके उज्ज्वल भविष्य का प्रकाश फैलाया।

कहानियों में 'दूध का कर्ज', 'भलाई का फल' व 'बेचारा लुहार' सच्ची और अच्छी लगी। सुनहरा पक्षीः पीलक की प्रस्तुति तथा कपड़ा बुनने की मशीन का आविष्कार की जानकारी शानदार व जानदार लगी। 'सूरज बोला', 'हरा भरा पेड़', 'पेड़ की छाया' कविता प्रेरणादायक लगी। कुल मिलाकर अंक सुंदर व मनमोहक था।

– श्याम बिल्दानी 'सादगी'
(सिंधी कैम्प, बड़नेरा)

असीम हर्ष होता है,
प्रतिमाह हँसती दुनिया पाकर।
सचमुच में हँसती दुनिया,
ज्ञान का सागर।
इसीलिए हर किसी को चाहिए कि,
देखे इसे खुद आजमाकर।
बेजोड़ है इसकी कविताओं
और कहानियों का संग्रह,
अतएवं अन्य पत्रिकाएं नहीं,
बन सकती कभी इसकी तरह।
जिस किसी को मिल जाए
हँसती दुनिया का सहारा,
जीवन उसका सफल होगा,
ऐसा विश्वास है हमारा।
हँसती दुनिया के प्रकाशन में
सदैव रहे निरंतरता,
इसके पाठकों में पनपे
विनम्रता, सरलता एवं गुणग्राहकता।

– रवीन्द्र प्रसाद सिन्हा (कटकोना)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 उ	द	2 य	■	3 मा	ता
न्न	■	4 मु	थै	या	■
5 ति	6 को	ना	■	■	7 अ
■	रि	■	8 ना	9 सि	क
10 नि	या	11 जी	■	12 त	ब
ड	■	13 न	व	म्ब	र
14 र	ज	त	■	र	■

TU HI NIRANKAR

SUPER Aqua®

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा
दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएं।

SUPER AQUA®
R.O. System

Manufacturer :

Wholesale & Retailer of all type of
Water Purifier & R.O. System

Free Demo Water Testing

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

For Contact 09910103767
Customer Care : 09971830830

आसान किस्तों पर उपलब्ध
0% FINANCE

Delhi Off. G-3/115, Ground Floor Sec-16, Rohini, Delhi-85
Nr. Mother Dairy
Head off. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex, Nr. T.V Tower
Badlapur (East) Thane, Maharashrta, (M) 09930804105

Email : superaqua1@gmail.com

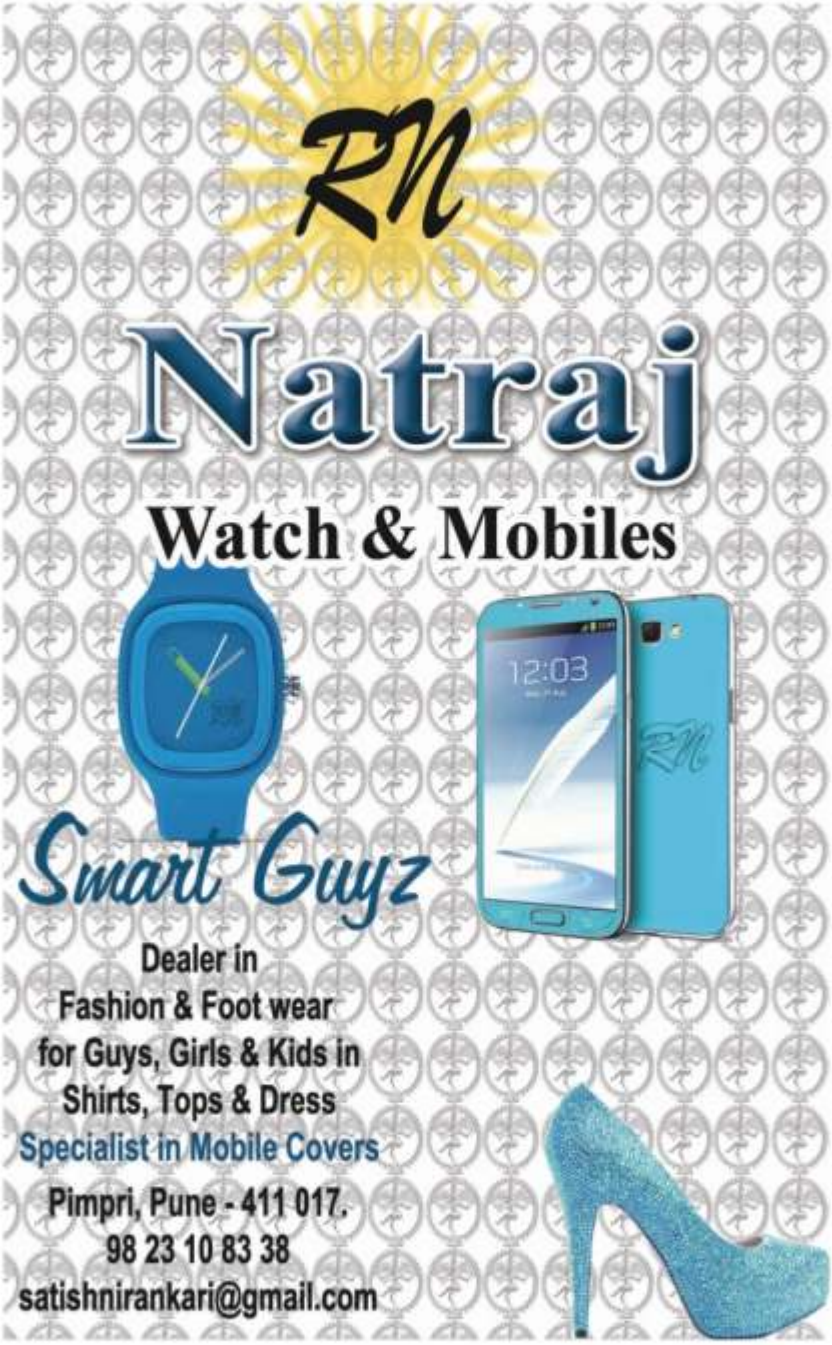
RN
Natraj
Watch & Mobiles
Smart Guyz
Dealer in
Fashion & Foot wear
for Guys, Girls & Kids in
Shirts, Tops & Dress
Specialist in Mobile Covers
Pimpri, Pune - 411 017.
98 23 10 83 38
satishnirankari@gmail.com

Dhan Nirankar Ji

V.P. Batra
+91-9810070757

Guru Kripa Advertising Pvt. Ltd.

Outdoor Advertising Wallpaintings
All Over India

Pankaj Arcade-II, Plot no. 5, 2nd floor, Sec 11
Pocket IV, Dwarka, New Delhi-110075
Ph: 011-42770442, 011-42770443
Fax 011-28084747, 42770444 Mob.: 9810070757
email: info@gurukripaadvertising.com
www.gurukripaadvertising.com

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2012-14
Licence No. U (DN)-23/2012-14
Licenced to post without Pre-payment

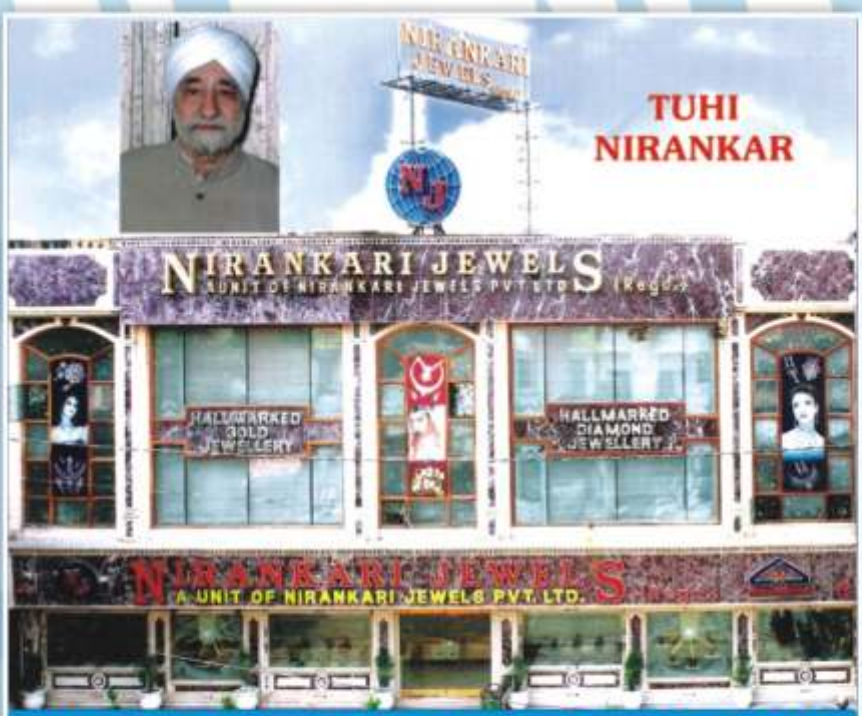

NIRANKARI JEWELS REGD.
A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

GOVT. APPROVED VALUERS
78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009
TELE : (Showroom)
27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133
E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Posted at IMBC/1 Prescribed Dates 21st & 22nd
Dates of Publication : 16th. & 17th. (Advance Month)